Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

(सूरः तौबा : 41)

अनुवाद : निकल खड़े हो हल्के भी और भारी भी। और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है यदि कि तुम ज्ञानरखते हो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक 14

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

24 रमज़ान 1445 हिज्री कमरी, 04 शहादत 1403 हिज्री शम्सी, 04 अप्रैल 2024 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

## ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बख़ैरियत हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद प्रत्येक मुसीबत आसान है

जहां तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की जुदाई के ग़म का संबंध है वह आख़िर तक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को रहा। हमेशा इसका वर्णन करते थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़े पुरहिकमत अंदाज़ में मुस्लमान महिलाएं के फ़ौत शुदगान पर नोहा करने की मनाही फ़रमाई

نُسَيْبَه مَازِنِيَه अर्थात हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा के सिवा किसी औरत के विषय में साबित नहीं कि उसने उहद के दिन जंग में शिरकत की हो

हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया हमारे लिए अल्लाह से दुआ फ़रमाएं कि हम जन्नत में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ करते हुए फ़रमाया। हे अल्लाह! उनको जन्नत में मेरा रफ़ीक़ और साथी बना। उसी वक़्त हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा मुझे इसकी पर्वा नहीं है कि दुनिया में मुझ पर क्या गुज़रती है

उहद की जंग के बाद सहाबा कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की तदफ़ीन तथा उहद की जंग में सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हा के साहस और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़-ओ-मुहब्बत और वफ़ा का ईमान वर्धक वर्णन

श्रीमान ग़स्सान ख़ालिद नकीब साहिब, श्रीमती नौशाबा मुबारक पत्नी श्रीमान जलीस अहमद मुरब्बी सिलसिला, श्रीमती रज़ीया सुल्ताना साहिबा पत्नी श्रीमान अब्दुल हमीद ख़ान साहब, श्रीमती बुशरा बेगम साहिबा पत्नी श्रीमान डाक्टर मुहम्मद सलीम साहिब और श्रीमान रशीद अहमद चौधरी साहिब आफ़ नार्वे की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 01 मार्च 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु उहद की जंग के हालात के विषय में वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ख़मियों और शुहदा को जमा किया। ज़ख़मियों की मरहम पट्टी की गई और शुहदा के दफ़नाने का इंतेज़ाम किया गया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि ज़ालिम कुफ़्फ़ार-ए-मक्का ने कुछ मुस्लमान शुहदा के नाक कान भी काट दिए हैं। इसलिए ये लोग जिनके नाक कान काटे गए हैं उनमें ख़ुद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचा हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह नज़ारा देखकर अफ़सोस हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कुफ़्फ़ार ने ख़ुद अपने अमल से अपने लिए इस बदला को जायज़ बना दिया है जिसको हम नाजायज़ समझते थे। परंतु ख़ुदा तआला की तरफ़ से इस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वह्यी हुई कि कुफ़्फ़ार जो कुछ करते हैं उन को करने दो। तुम

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

रहम और इन्साफ़ का दामन हमेशा थामे रखो।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 254-255) यह है इस्लाम की तालीम।

हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की तदफ़ीन और तकफ़ीन के बारे में आता है कि हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को एक ही कपड़े में कफ़न दिया गया, कुछ पहले मैं संक्षिप्त वर्णन कर चुका हूँ बल्कि तफ़सीली वर्णन कर चुका हूँ। कुछ बातें नहीं आई थीं। जब उनका सिर ढाँका जाता तो दोनों पांव से कपड़ा हट जाता और जब चादर पांव की तरफ़ खींच दी जाती तो उनके चेहरे से कपड़ा हट जाता। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का चेहरा ढांक दिया जाए और पांव पर हरमल या अज़ख़र घास रख दी जाए। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हो को जो कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के भांजे थे एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। अल् तबकातुल् कुबरा का यह हवाला है।

(अल् तबकातुल् कुबरा भाग 3 पृष्ठ 6-7 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(मस्नद अहमद बहग 7 पृष्ठ 72 हदीस 21387 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.)

और उन शुहदा की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने या न पढ़ने के बारे में बेहस में पिछले ख़ुतबा में वर्णन कर चुका हूँ।

नौहा और बैन जो मुर्दों पर, फ़ौत शुदगान पर किया जाता है।

इस की किस पुरहकमत अंदाज़ में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मनाही फ़रमाई

एक रिवायत में आता है और यह हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन उमर की रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब उहद से वापस लौटे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुना कि अंसार की औरतें अपने खाविंदों पर रोती और बैन करती हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्या बात है हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को कोई रोने वाला नहीं? अंसार की औरतों को पता चला तो फिर वे हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत पर बैन के लिए इकट्ठी हो गईं। फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँख लग गई। मेरे ख़्याल में मस्जिद में ही कुछ फ़ासले पर थे। और जब बेदार हुए तो वे महिलाएं उसी तरह रो रही थीं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आज ये लोग हमज़ा का नाम लेकर रोती ही रहेंगी? बंद नहीं करेंगी। उन्हें कह दो कि वापस चली जाएं। तब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें हिदायत फ़रमाई कि अपने घरों को वापस लौट जाएं और आज के बाद किसी मरने वाले का मातम और बैन न करें।

(मस्नद अहमद भाग 2 पृष्ठ 418-419 हदीस 5563 प्रकाशन आलेमुल् कुतुब बेरूत 1998 ई.)

तो इस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मर्दों पर नोहा करना नाजायज़ क़रार दिया और किसी भी किस्म का नोहा और बैन ख़त्म कर दिया। यूं बड़ी हिक्मत से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंसार की औरतों की भावनाओ का ख़्याल रखा। उन्हें अपने खाविंदों और भाईयों की जुदाई पर मातम से रोकने की बजाय हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन किया। इन पर रोने वाला कोई नहीं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत पर फिर लाश की बे-हुरमती देखकर शदीद ग़म था लेकिन जब देखा कि अंसार औरतें अब यह नोहा बंद ही नहीं कर रहीं। यह एक रस्म ही थी तो फिर इस पर इस रस्म को ख़त्म करने के लिए अपना उदाहरण पेश कर दिया और उन्हें सब्र की तलक़ीन की। ऐसी तलक़ीन जो असर करने वाली थी।

जहां तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की जुदाई के ग़म का संबंध है वह आख़िर तक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को रहा। हमेशा उसका वर्णन करते थे।

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत पर अपने मर्सिया में कहा था कि मेरी आँखें आँसू बहाती हैं और हम्ज़ा की मौत पर उन्हें रोने का बजा तौर पर हक़ भी है। परंतु ख़ुदा के शेर की मौत पर रोने-धोने और चीख़-ओ-पुकार से किया हासिल हो सकता है। वह ख़ुदा का शेर हम्ज़ा कि जिस सुबह वह शहीद हुआ दुनिया कह उठी कि शहीद तो यह जवाँ मर्द है।

(ओसोदुल गाबा भाग 2 पृष्ठ 69 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

हज़रत मुसअब रज़ियल्लाहु अन्हो की तदफ़ीन के बारे में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हज़रत मसाब रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश के पास पहुंचे। उनकी नाश चेहरे के बल पड़ी थी। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके पास खड़े हो कर यह आयत तिलावत फ़रमाई कि

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا (अल् अह्ज़ाब : 24) कि मोमिनों में से ऐसे मर्द हैं जिन्हों ने जिस बात पर अल्लाह से अह्द किया उसे सच्चा कर दिखाया। अतः उनमें से वह भी है जिसने अपनी मिन्नत को पूरा कर दिया और उनमें से वह भी है जो अभी इंतेज़ार कर रहा है और उन्होंने हरगिज़ अपने तर्ज़-ए-अमल में कोई तबदीली नहीं की। इसके बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। إِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ يَشْهَدُ أَنَّكُمُ الشُّهَدَاءُ عِنْدَ اللّٰهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ कि ख़ुदा का रसूल गवाही देता है कि तुम लोग क़ियामत के दिन भी अल्लाह के हाँ शुहदा हो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को संबोधित करके फ़रमाया कि उनकी ज़यारत कर लो और उन पर सलाम भेजो। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है क़यामत के दिन तक जो भी उन पर सलाम करेगा यह उसके सलाम का जवाब देंगे। हज़रत मसाब रज़ियल्लाहु अन्हो के भाई हज़रत अबू रौम बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत सोवेत बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत मसाब रज़ियल्लाहु अन्हो को क़ब्र में उतारा।

(अल् तबकातुल् कुबरा भाग 3 पृष्ठ 89-90 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में तहरीर फ़रमाते हैं कि "उहद के शुहदा में एक साहिब मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो थे। ये वे सबसे पहले मुहाजिर थे जो मदीना में इस्लाम के मुबल्लिग बन कर आए थे। ज़माना-ए-जयहेलियत में मसाब रज़ियल्लाहु अन्हो मक्का के नौजवानों में सबसे ज़्यादा ख़ुशपोश और बांके समझे जाते थे' बड़े अच्छे लिबास पहनने वाले और बड़े रख-रखाव वाले थे। "और बड़े नाज़ो नेअमत में रहते थे। इस्लाम लाने के बाद उनकी हालत बिल्कुल बदल गई। इसलिए रिवायत आती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दफ़ा उनके बदन पर एक कपड़ा देखा जिस पर कई पैवंद लगे हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उनका वह पहला ज़माना याद आगया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चशम पुरआब हो गए।' आँखों में आँसू आगए। "उहद में जब मसअब शहीद हुए तो उनके पास इतना कपड़ा भी नहीं था कि जिससे उनके बदन को छुपाया जा सकता हो। पांव ढाँकते थे तो सिर नंगा हो जाता था और सिर ढाँकते थे तो पांव खुल जाते थे। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म से सिर को कपड़े से ढांक कर पांव को घास से छिपा दिया गया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ : 501)

उहद के दिन जंग के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दुआ भी की। इस के बारे में वर्णन आता है कि हज़रत रफ़ा बिन रफ़िअ ज़ुराक़ी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के दफ़न से फ़ारिग़ होने के बाद अपने घोड़े पर सवार हुए और मुस्लमान आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द थे। अक्सर ज़ख़मी थे और बनू सलमा और बनू अब्दुल अशहल के ज़ख़मी ज़्यादा थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ चौदह महिलाएं थीं। जब उहद के नीचे पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम सब सफ़ बनाओ ताकि मैं अपने रब की सना करूँ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे मर्दों ने सफ़ बनाई। और उनके पीछे औरतों ने तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ये कलिमात कहे।

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهٗ، اَللّٰهُمَّ لَا قَابِضَ لِمَا بَسَطْتَ، وَلَا بَاسِطَ لِمَا قَبَضْتَ، وَلَا هَادِيَ لِمَنْ أَضْلَلْتَ، وَلَا مُضِلَّ لِمَنْ هَدَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُقَرِّبَ لِمَا بَاعَدْتَ وَلَا مُبْعِدَ لِمَا قَرَّبْتَ، اَللّٰهُمَّ ابْسُطْ عَلَيْنَا مِنْ بَرَكَاتِكَ وَرَحْمَتِكَ وَفَضْلِكَ وَرِزْقِكَ اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ النَّعِيْمَ الْمُقِيْمَ الَّذِيْ لَا يَحُوْلُ وَلَا يَزُوْلُ، اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ النَّعِيْمَ يَوْمَ الْعَيْلَةِ۔ اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ الْأَمْنَ يَوْمَ الْخَوْفِ وَالْغِنٰى يَوْمَ الْفَاقَةِ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ عَائِذٌ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا أَعْطَيْتَنَا وَمِنْ شَرِّ مَا مَنَعْتَنَا اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْإِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ فِيْ قُلُوْبِنَا، وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِيْنَ، اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَأَحْيِنَا مُسْلِمِيْنَ، وَأَلْحِقْنَا بِالصَّالِحِيْنَ غَيْرَ خَزَايَا وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ، اَللّٰهُمَّ قَاتِلِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ، وَاجْعَلْ عَلَيْهِمْ رِجْزَكَ وَعَذَابَكَ، اَللّٰهُمَّ قَاتِلِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ

أُوتُوا الْكِتَابَ إِلٰهَ الْحَقِّ۔ [آمین]۔

हे अल्लाह समस्त तारीफ़ें तेरे लिए हैं। हे अल्लाह जिस चीज़ को तो कुशादा कर दे उसको कोई रोकने वाला नहीं और जिसको तू क़बज़ कर ले उसको कोई कुशादा नहीं कर सकता और जिस को तू गुमराह कर दे उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं और जिसको तू हिदायत दे दे उसको कोई गुमराह करने वाला नहीं और जो चीज़ तू रोक ले उसका कोई अता करने वाला नहीं और जो तू अता करे उससे कोई रोकने वाला नहीं और जिसको तू दूर कर दे उस को कोई क़रीब करने वाला नहीं है और जिसको तो क़रीब कर दे उस को कोई दूर करने वाला नहीं है। हे अल्लाह हम पर अपनी बरकात और रहमत और अपने फ़ज़ल और रिज़्क़ में से कुशादगी कर। हे अल्लाह हम तुझसे तेरी ऐसी क़ायम होने वाली नेअमतों का सवाल करते हैं जो न फिरें और न ज़ायल हों। हे अल्लाह हम फ़िक्र के दिन तुझसे नेअमतों का सवाल करते हैं। हे अल्लाह हम तुझसे ख़ौफ़ के दिन अमन का सवाल करते हैं और फ़ाक़े के दिन गिना का। हे अल्लाह मैं तुझसे इन चीज़ों के शर से पनाह मांगता हूँ जो तू ने हमें अता कीं और उस के शर से जिससे तू ने हमें मना किया। हे अल्लाह ईमान को हमारी तरफ़ महबूब कर दे और इस को हमारे दिलों में अलंकृत कर दे और हमारी तरफ़ कुफ़र, फ़िस्क़ और ना-फ़रमानी को नापसंद कर दे और हमें सीधी राह पर चलने वालों में से बना दे। हे अल्लाह हमें मुस्लमान होने की हालत में वफ़ात दे और हमें मुस्लमान होने की हालत में ज़िंदा कर और हमें नेक लोगों के साथ इस तरह लाहक़ कर दे कि न हम रुस्वा हों और न फ़िले में पढ़ें। हे अल्लाह इन काफ़िरों को हलाक कर दे जो तेरे रसूलों को झूठलाते हैं और तेरे रास्ते से रोकते हैं और उन पर अपनी सज़ा और अज़ाब नाज़िल कर। हे अल्लाह हे माबूद-ए-हक़! अहल-ए-किताब काफ़िरों को हलाक कर। आमीन।

(सबलुल हुदा वल् रिशादभाग 4 पृष्ठ नंबर 227दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993ई.)

यह दुआ थी जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वहां उस वक़्त सब लोगों को इकट्ठा कर के पढ़ी।

ग़ज़व-ए-उहद में सहाबयात के किरदार का मैं ने पहले भी वर्णन किया था, मज़ीद वर्णन करता हूँ

ग़ज़व-ए-उहद में जहां मर्दों ने जाँनिसारी की तारीख़ रक़म की वहां महिलाएं ने भी इस्लामी लश्कर के शाना बशाना ख़िदमत में नुमायां किरदार अदा किया। हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में रिवायत में वर्णन मिलता है कि उन्होंने उहद के युद्ध में शिरकत की थी।

इसलिए हज़रत मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन हन्तब रज़ियल्लाहु अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस रोज़ उहद की जानिब रवाना हुए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रास्ते में मदीना के क़रीब एक जगह "शेख़ीन" के पास रात क़ियाम किया जहां हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा एक भुनी हुई दस्ती लाएंगे जिसमें से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नोश फ़रमाया। इसी तरह नबीज़ लाएं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबीज़ पी।

(अल् तबकातुल् भाग 3 पृष्ठ 67 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि यह हरीरा की तरह की कोई चीज़ थी।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि उहद के दिन मैं ने हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा और अपनी माता एम सुलेम को देखा। वह मशक में पानी भर भर कर लाती थीं और प्यासों को पिलाती थीं। बुख़ारी की रिवायत में है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया जब उहद का दिन हुआ तो लोग शिकस्त खा कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हट गए अर्थात परे चले गए। फिर रावी कहते हैं कि और मैं ने हज़रत आयशा बिंत अबू बकर को देखा और हज़रत उम्मे सलीम रज़ियल्लाहु अन्हा को और उन्होंने अपने कपड़े मज़बूती से बाँधे हुए थे मैं इन दोनों की पिंडलियों की पाज़ेबें देख रहा था। वाह दोनों तेज़ी से मुशकें ले जा रही थीं और इस के इलावा किसी दूसरे ने कहा, दूसरी रिवायत यह है कि वह दोनों अपनी कमरों पर मशकें उठा कर ला रही थीं। फिर वह दोनों लोगों के मुँह में उनको उंडेलती थीं अर्थात पानी पिला रही थीं। फिर वे दोनों वापस होतीं और उन्हें भर के लातें। फिर वे दोनों आतीं और वे उनको लोगों के मुँह में उंडेलतीं।

(सही बुख़ारी किताब الجهاد باب غزو النساء وقتالهن مع الرجال हदीस 2880)

हज़रत अबू सईद ख़ुद की माता उम्मे सलीत रज़ियल्लाहु अन्हो भी दूर से पानी के मश्कीज़े भर भर के लातें और दूसरी तरफ़ ज़ख़मियों और प्यासों को पानी पिलातें। हज़रत उम्मे अतिया रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी यही ख़िदमात सरअंजाम दीं परंतु कुछ अन्य मुस्लिम महिलाएं बाक़ायदा नेज़ा और तलवार हाथ में लेकर दुश्मनों से समय समय पर जंग भी करती रही हैं। उनमें से एक हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जैसा कि मैं पिछले ख़ुतबा में वर्णन कर चुका हूँ कि जब उन्होंने इब्ने कययमा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला-आवर होते देखा तो बिला ख़ौफ़-ओ-ख़तर अरब के इस शह-सवार के सामने मुक़ाबला के लिए डट गईं और इस पर असंख्य हमले करके उसे पसपाई पर मजबूर कर दिया।

(ग़ज़वात-ओ-सराया अज़ मुहम्मद अज़हर फ़रीद पृष्ठ 198 फ़रीदिया पब्लिशरज़ साहीवाल 2018 ई.)

इब्ने अबी शेबाऔर इमाम अहमद बिन हम्बल ने अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत किया है कि उहद के दिन औरतें मुस्लमानों के पीछे मुशरेकीन के ज़ख़मी लोगों को मौत के घाट उतारती थीं।

(सबलुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 203 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

कुछ सहाबियात उहद के मैदान में जंग के बाद आईं इसलिए वर्णन हुआ है कि जब मुशरेकीन चले गए तो औरतें सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आएं उनमें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं। वह जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिलें तो उनको चिमट गईं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ख़म धोने लगीं और अली रज़ियल्लाहु अन्हु ढाल के द्वारा पानी बहाते थे लेकिन ख़ून ज़्यादा बह रहा था। हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने चटाई का कुछ हिस्सा जला कर राख बना ली और इस से ज़ख़म की टकोर की, यहां तक कि वह ज़ख़म के साथ मिल गई और ख़ून रुक गया।

(सबलुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 209-210 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा उहद की जंग के बारे में ख़बर लेने के लिए मुदीन की औरतों के साथ घर से बाहर निकलीं। उस वक़्त तक पर्दे के अहकाम नाज़िल नहीं हुए थे। जब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा हुररा के स्थान पर पहुंचीं तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो की मुलाक़ात हिंद बिंत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई जो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन थीं। हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी ऊंटनी को हाँक रही थीं। उस ऊंटनी पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पति हज़रत अम्र बिन जमूह रज़ियल्लाहु अन्हु, बेटे हज़रत ख़ल्लाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु और भाई हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु की नाशें थीं। तीनों की नाशें ऊंट पर थीं। जब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मैदान-ए-जंग की ख़बर लेने की कोशिश की तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हें कुछ ख़बर है कि तुम लोगों को किस हाल में पीछे छोड़ आई हो? इस पर हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बख़ैरियत हैं

और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद प्रत्येक मुसीबत आसान है।

अब अपने तीन क़रीबी रिश्तेदारों की, पति, बेटा और भाई की लाशें उठाई हुई हैं लेकिन पूछने पर यह कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ठीक हैं तो सब ठीक है। उनको तो मैं दफ़ना ही दूँगी अब। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ैरियत से हैं तो फिर कोई ऐसी बात नहीं।

(किताब अल्मग़ाज़ी बहग1 पृष्ठ 232-233 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि ग़ज़व-ए-उहद के दिन में यह देखने के लिए रवाना हुई कि लोग क्या कर रहे हैं। मेरे पास पानी का भरा हुआ मशकीज़ा था जो मैं ने ज़ख़मियों को पिलाने के लिए साथ लिया था यहां तक कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंच गई। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के मध्य में थे और मुस्लमानों का पलड़ा भारी था। फिर अचानक मुस्लमानों को शिकस्त हो गई। मैं जल्दी से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब पहुंची और खड़ी हो कर जंग करने लगी। मैं तलवार के ज़रीया दुश्मनों को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब आने से रोक रही थी। साथ ही मैं कमान से तीर भी चला रही थी यहां तक कि इसी में ख़ुद भी ज़ख़मी हो गई।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 313 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक सीरत निगार ने वर्णन किया है कि जिस औरत ने उहद की जंग में जंग की और शिकस्त के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के लिए बहादुरी की हद तक पहुंची हुई तीर-अंदाज़ी की वह हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं, उम्मे अम्मारा नुस्यबा मज़िनिया थीं।

(ग़ज़वा अहद अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 171 नफ़ीस अकैडमी कराची)

नसीबा मज़िनिया अर्थात हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा के सिवा किसी औरत के मुताल्लिक़ साबित नहीं कि उसने उहद के रोज़ जंग में शिरकत की है।

हाँ इतिहासकारों ने वर्णन किया है कि मुस्लमानों की कुछ औरतें मुशरेकीन के हट जाने के बाद मदीना से मैदान-ए-कार-ज़ार की तरफ़ गईं और उन्होंने ज़ख़मियों की इमदाद करने और पानी पिलाने इत्यादि में हिस्सा लिया। इन औरतों में हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और आपकी बेटी फ़ातम ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा शामिल थीं। बुख़ारी ने एक रावी को रिवायत किया है कि मैं ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सलीम रज़ियल्लाहु अन्हा को देखा। ये दोनों तेज़ी से पानी के मशकीज़ों को अपनी पीठ पर उछालतीं और लोगों के मिनाओं में पानी डालतीं। फिर वापस आकर उन्हें भरतीं, फिर आतीं और लोगों के मिनाओं में डालतीं।

(ग़ज़वा अहद अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 175 नफ़ीस अकैडमी कराची)

एक लेखक लिखता है कि घमसान के रन के वक़्त मुस्लमानों की कुछ औरतें इमदादी कार्रवाई के लिए तैयार हुईं। इन औरतों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दूध पिलाने वाली महिला हज़रत उम्मे एमन रज़ियल्लाहु अन्हा भी शामिल थीं। इतिहासकारों ने वर्णन किया है कि जब मुस्लमानों की पराजय पार्टी ने मदीना में दाख़िल होने का इरादा किया तो हज़रत उम्मे एमन रज़ियल्लाहु अन्हा उन्हें मिलीं और आप रज़ियल्लाहु अन्हो उनके चेहरे पर मुट्ठियों से मिट्टी डालने लगीं और कुछ को ज़जर-ओ-तौबीख़ के तौर पर कहने लगीं। बड़ी डाँट डपट उनसे की कि तुम लड़ सकते तो।

यह तकला लो अर्थात तकला वह है जिससे औरतें सूत कातती हैं। धागे बनाती हैं और अपनी तलवार लाओ अर्थात तलवारें हमें दे दो और तुम हमारे औरतों वाले काम करो। इस के बाद तेज़ी से मैदान-ए-जंग पहुंच गईं। हज़रत उम्मे एमन रज़ियल्लाहु अन्हा ज़ख़मियों की इमदाद के लिए तैयार होती थीं जबकि लड़ाई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तेज़ी से हो रही होती थी यहाँ तक कि उन्हें इमदादी कार्रवाई के दौरान मुशरेकीन के तीर भी लगते थे। इब्ने असीर की किताब अल् कामिल फ़िल् तारीख़ में है कि हज़रत उम्मे एमन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़ौज में ज़ख़मियों को पानी पिला रही थीं कि हिब्बान बिन अरिका ने आपको तीर मारा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हा गिर पड़ी और नंगी हो गईं तो यह दुश्मन-ए-ख़ुदा उस पर बहुत हसे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात बड़ी कष्ट देने वाली गुज़री। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु को एक तीर दिया जिसका फल नहीं था फ़रमाया: उसे मॉरो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे मारा तो वह तीर हबान के सीने में जा लगा और वह चित्त हो कर गिर पड़ाहती कि नंगा हो गया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस पर मुस्कुराए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया साद ने उम्मे एमन का बदला ले लिया है।

एक सीरत निगार ने लिखा है कि ख़ातमा जंग पर कुछ मोमिन औरतें मैदान जिहाद में पहुंचीं। इसलिए एक सीरत निगार ने लिखा है कि यह प्रभावी महिलाएं उस वक़्त मैदान-ए-जंग में गईं जब मुस्लमानों ने मुशरिकों का पीछा शुरू कर दिया था और उन्हें फ़तह के आसार नज़र आना शुरू हो गए थे।

(ग़ज़वा अहद अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 176-177 नफ़ीस अकैडमी कराची)

(अल् रहीकुल अल् ख़तूम अनुवादक पृष्ठ 377 अल् मकतब अल् सिललिया लाहौर)

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 393मक्तबा इस्लामिया रियाज़)

संक्षिप्त यह कि मुस्लिम महिलाएं मैदान उहद की तरफ़ उस वक़्त गई होंगी। यह इमकानात ही हैं। वह मुस्लमानों की फ़ौज में तो बाक़ायदा शामिल नहीं थीं। नंबर एक कि जब मुस्लमानों की इबतेदाई फ़तह की ख़बर मदीना पहुंची तो यह ख़बर सुनकर वह उहद की तरफ़ आई होंगी लेकिन तब तक जंग का नक़्शा बदल चुका था। इसलिए मुस्लमान औरतों ने भी मैदान-ए-जंग में हिस्सा लिया।

दूसरे यह भी करीब का अनुमान है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की ख़बर पहुंची होगी तो यह जांनिसार महिलाएं भी बेक़रार हो कर उहद की तरफ़ चली आई होंगी और फिर वह जंग के इस आख़िरी मरहले में शामिल हुई होंगी जिसमें एक तरफ़ दिफ़ाई हमला जारी था और दूसरी तरफ़ ज़ख़मियों की मरहम पट्टी का काम शुरू था। बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है।

उहद के युद्ध का वाक़िया वर्णन करते हुए हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि उहद के दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए अपने माता पिता को इकट्ठा किया। उन्होंने कहा कि मुशरिकों में से एक आदमी था जिस ने मुस्लमानों में आग लगा रखी थी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन अर्थात हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया तुम तीर चलाओ तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों। अर्थात माँ बाप, माता पिता को इकट्ठा किया। मुराद यह है कि आपने कहा तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु हैं : मैं ने वह तीर जिसका फल नहीं था उसके पहलू में मारा जिसकी वजह से वह मर गया और उस का पर्दा खुल गया और मैं ने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हंस पड़े।

(सही मुस्लिम किताबुल् फ़ज़ायल अल् सहाबा बाब फ़ी फ़ज़ल साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु हदीस 6237)

एक दूसरी रिवायत में यह वाक़िया यूं वर्णन हुआ है कि इस मुशरिक ने, इस का नाम कुछ तारीख़ की किताबों में हबान बताया जाता है, एक तीर चलाया जो हज़रत उम्मे एमन रज़ियल्लाहु अन्हा के दामन में जा लगा जबकि वह ज़ख़मियों को पानी पिलाने में व्यस्त थीं। इस पर हबान हँसने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु को एक तीर पेश किया। वह तीर हबान के हलक़ में जा लगा और वह पीछे गिर पड़ा जिससे उसका नंग ज़ाहिर हो गया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुरा दिए।

(अल् असाबा भाग 3 पृष्ठ 64 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

दरअसल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह ख़ुशी और मुस्कुराहट अल्लाह के इस एहसान पर थी कि उसने एक ख़तरनाक दुश्मन को एक ऐसे तीर से रास्ते से हटाया जिसका फल भी नहीं था। (उद्धारित सही मुस्लिम भाग 13 पृष्ठ 41 हाशिया, नूर फ़ाउंडेशन) सीधा-सीधा एक सोटी थी जिसने उस को मार दिया।

एक लेखक ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शुजाअत और फ़िरासत का वर्णन करते हुए लिखा है कि जब ख़ालिद बिन वलीद की क़ियादत में क़ुरैशी शहसवार अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथियों को शहीद करते हुए जो दर्रे पर खड़े थे ये लोग इस्लामी लश्कर की पुश्त पर नमूदार हो गए। उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ केवल नौ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की नफ़री मौजूद थी। अन्य मुजाहेदीन तो दुश्मन का पीछा करते हुए मैदान में बहुत दूर पहुंच गए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जूंही ख़ालिद बिन वलीद और क़ुरैशी शहसवारों को देखा तो फ़ौरी तौर पर एक दलेराना फ़ैसला किया। अन्यथा बहुत आसान था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अभी शहसवारों की निगाह नहीं पड़ी थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पहले ख़ुद को महफ़ूज़ पनाह-गाह की तरफ़ ले जाते लेकिन ऐसे में इस्लामी लश्कर का बेशुमार नुक़्सान होना लाज़िमी था। अपने आपको महफ़ूज़ कर सकते थे लेकिन अपनी हिफ़ाज़त में इस्लामी लश्कर का नुक़्सान हो सकता था, इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़ैसला यह किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रार का रास्ता अपनाने की बजाए बुलंद आवाज़ में नारा लगाया ताकि इस्लामी लश्कर सुनकर पुश्त को देखे तो ऐसे में जबकि इस्लामी लश्कर मैदान में बहुत आगे था उनसे पहले क़ुरैशी शहसवारों तक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आवाज़ का पहुंचना भी लाज़िम था। आज़माईश की इस घड़ी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रतिभा और बेमिसाल शुजाअत अर्थात अजीब-ओ-ग़रीब किस्म की और बेमिसाल शुजाअत प्रकट हुई क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी जान को ख़तरे में डाल कर सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो की जान बचाने का फ़ैसला फ़रमाया था और निहायत बुलंद आवाज़ से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को पुकारा। अल्लाह के बंदो! इधर। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आवाज़ पूरे मैदान में गूंज गई थी। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो को भी हालात की नज़ाकत का एहसास हो गया था चूँकि वह काफ़ी फ़ासले पर मौजूद थे इसलिए उनसे पहले क़ुरैशी शहसवारों के एक दस्ते ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला कर दिया और बाक़ी शहसवारों ने तेज़ी के साथ मुस्लमानों को घेरना शुरू दिया।

(ग़ज़वात और सराया पृष्ठ 183-184 प्रकाशन फ़रीदिया प्रिंटिंग प्रैस साहीवाल)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़ख़मी हालत में भी हवास क़ायम रखना और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की राहनुमाई करना, उनकी हौसला-अफ़ज़ाई का वर्णन भी मिलता है। उत्बा बिन अबी वक्क़ास ने जो हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई था उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर एक पत्थर खींच कर मारा जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुँह पर लगा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का निचला चौथा दाँत अर्थात सामने वाले दो दाँतों और नोकीले दाँत के मध्य वाला दाँत टूट गया। साथ ही उस से निचला होंट फट गया। शारा बुख़ारी अल्लामा इब्ने हिज्र असकलानी वर्णन करते हैं कि दाँत का एक टुकड़ा टूटा था जड़ से नहीं निकला था।

(फ़तह अल् बारी भाग 7 पृष्ठ 464 हदीस 4070 क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची)

बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उत्बा बिन अबी वक्कास के ख़िलाफ़ यह दुआ की। اَللّٰھُمَّ لَا یَحُوْلُ عَلَیْہِ الْحَوْلُ حَتّٰی یَمُوْتَ کَافِرًا۔ हे अल्लाह एक वर्ष गुज़रने से पहले ही इस को काफ़िर की हैसियत से मौत दे। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह दुआ क़बूल फ़रमाई और इस को उसी दिन हातिब बिन अबी बल्ता रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़तल कर दिया। हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि जब मैं ने उत्बा बिन अबी वक्कास की यह शर्मनाक जसारत देखी तो मैं ने फ़ौरन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि उत्बा किधर गया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस सिम्त इशारा किया जिस तरफ़ वह गया था। मैं फ़ौरन ही उस के पीछा करने रवाना हुआ। यहां तक कि एक जगह में उस को पाने में कामयाब हो गया। मैं ने फ़ौरन ही उस पर तलवार का वार किया जिससे उसकी गर्दन कट कर दूर जागरी। मैं ने बढ़कर उसकी तलवार और घोड़े पर क़बज़ा किया और उसे लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह ख़बर सुनकर दो मर्तबा फ़रमाया। रज़ियल्लाहु अन्हो। रज़ियल्लाहु अन्हो। अर्थात अल्लाह तुमसे राज़ी हो गया। अल्लाह तुमसे राज़ी हो गया।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 317 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

उहद के युद्ध के अवसर पर हज़रत उम्मे अम्मारा अर्थात नुसेबा रज़ियल्लाहु अन्हा, इनके पति हज़रत ज़ैद बिन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके दोनों बेटे ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो और अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो सब के सब जंग के लिए गए थे। पहले भी मैं ने वर्णन किया था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन सबको फ़रमाया था कि अल्लाह तुम घर वालों पर रहमतें नाज़िल फ़रमाए। एक रिवायत में है कि अल्लाह तुम्हारे घराने में बरकत अता इस पर हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया हमारे लिए अल्लाह से दुआ फ़रमाएं कि हम जन्नत में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ करते हुए फ़रमाया। अल्लाह! उनको जन्नत में मेरा रफ़ीक़ और साथी बना। उसी वक़्त हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा मुझे इसकी पर्वा नहीं है कि दुनिया में मुझ पर क्या गुज़रती है।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 314 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

यह थी इन मुख़लिस सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हा की साहस और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़-ओ-मुहब्बत और वफ़ा की मिसाल। और यह भी कि अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल और उस के दीन की ख़ातिर क़ुर्बानी करने के मुक़ाबले पर दुनिया हक़ीर चीज़ थी। कई दफ़ा दुनियावी औरतों को बड़ा होता है लेकिन यह दीन पर क़ुर्बान होने वाली औरतें थीं।

इस से बाक़ी इंशा अल्लाह मैं आइन्दा वर्णन करूँगा। नमाज़ के बाद मरहूमीन की नमाज़ जनाज़ा भी है। उनका वर्णन भी कर देता हूँ

पहला ज़िक्र है श्रीमान ग़स्सान ख़ालिद नकीब साहिब यह सीरिया के हैं। पिछले दिनों अठहत्तर 78 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा एक बेटा और एक बेटी शामिल हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला के ज़माने में ख़ुद बैअत की थी। फिर उनकी तब्लीग़ से उनके बेटे ने भी बैअत करली। बेटी और बीवी ने अभी बैअत नहीं की।

मरहूम के बेटे हुसाम नकीब साहिब लिखते हैं। मेरे पिता मेरे दोस्त और साथी थे। उन्होंने ही मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का रास्ता दिखाया। नव्वे की दहाई में पिता साहिब का जमात से परिचय हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला के प्रोग्राम लिका माअल् अरब के माध्यम हुआ। इस से क़बल पिता साहिब का दीन के बारे में केवल यही नज़रिया था कि दिन महिज़ हुस्न-ए-सुलूक का नाम है लेकिन जब उन्होंने प्रोग्राम "लिका माअल् अरब" देखा तो कहा कि अगर कहीं कोई नेक आलिमे दीन है तो वह यह व्यक्ति अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला हैं और अगर सही दीन इस्लाम कहीं है तो वह यही है जो ये लोग बता रहे हैं। उस वक़्त पिता साहिब की उम्र तक़रीबन पच्चास साल थी। उस वक़्त उन्होंने नमाज़ पढ़ना सीखी क्योंकि उस वक़्त से पहले उन्होंने कभी नमाज़ नहीं पढ़ी थी और फिर ऐसे इस पर कारबन्द हुए कि मुझे नहीं याद कि कभी उन्होंने नमाज़-ए-तहज्जुद भी छोड़ी हो। कहते हैं कि पिता साहिब ने 2003 ई. में बैअत की फिर एक माह बाद उन्होंने मुझे भी क़ायल कर लिया। फिर लिखते हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला की ज़िंदगी के आख़िरी दिनों की यह बात है कि जब पिता साहिब ने अब्दुल हई भट्टी साहिब मुरब्बी सिलसिला के ज़रीया निज़ाम-ए-वसियत के बारे में सुना तो फ़ौरन वसियत के निज़ाम में शामिल हो गए। उस वक़्त उन्हें कहा गया कि पहले रिसाला अल् वसियत पढ़ लें। उन्होंने जवाब दिया कि मैं वह तो लाज़िमी पढ़ूँगा और उसे समझने की कोशिश भी करूँगा लेकिन इस से मेरी इस निज़ाम से मुहब्बत और इस से जुड़े होने के जोश में कोई तबदीली नहीं आएगी बल्कि उसका अध्यन मुझे इस पर यक़ीन में मज़ीद बढ़ाएगा। मुझे यक़ीन तो पहले ही है इसके हक़ होने पर। जब से पिता साहिब का जमात से परिचय हुआ, जमात के लिटरेचर में से जो कुछ भी उन्हें मिलता उसका अध्यन करने की कोशिश करते और फिर उसे समझ कर कम्पयूटर पर अपने तरीक़ से इस के बारे में लिख लेते, अपने नोटिस बनाते। कहते हैं मुझे अक्सर कहा करते थे कि अल्लाह तआला मुझे इतनी उम्र दे दे कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके ख़लिफ़ा-ए-के समस्त लिटरेचर को पढ़ सकूँ ता जो कुछ मैं ने पिछले ज़िंदगी में खोया है उस का तदारुक कर सकूँ। मरहूम को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तफ़सीर-ए-कबीर से इशक़ था और उसे उन्होंने असंख्य बार पढ़ा। यह बेटा कहता है कि जब कभी मुझे किसी मज़मून के बारे में कोई ज़रूरत पेश आती तो पिता साहिब इस मज़मून को मुकम्मल तफ़सील के साथ मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ुलफ़ाए किराम की कुतुब से निकाल कर दे देते। यहां से जो मेरा लाईव ख़ुतबा जाता है मरहूम ख़ुतबा जुमा के अनुवाद की नज़र-ए-सानी का काम भी किया करते थे। इसी तरह अरबिक डैसक की तरफ़ से दिए गए नज़र-ए-सानी के कामों में बसा-औक़ात घंटों बैठे रहते। कहते हैं कभी मैं कहता कि आराम करें तो जवाब देते कि मुझे तो जमात के काम में ही आराम मिलता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके ख़लिफ़ा की कुतुब के अनुवाद की नज़र-ए-सानी के दौरान अक्सर उनकी आँखें भर आती थीं। जब बैअत की तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी का वाक़िया सुनाया कि वह बैअत करके अपने गांव आए तो प्रत्येक घर का दरवाज़ा खटखटाया और सबको मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने की ख़बर दी। इस के बाद पिता साहिब का भी यही तरीक़ था कि जो व्यक्ति भी उनसे मिलता चाहे पाँच मिनट के लिए ही क्यों न मिला हो वह उस को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने के बारे में ज़रूर बता देते थे। कहते थे कि मेरा काम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद की ख़ुशख़बरी सुनाना है। अगर किसी को समझ आ गई तो ठीक है। नहीं आई तो कम-अज़-कम मैं ने बीज तो फेंक दिया है इस का उगाना ख़ुदा तआला का काम है, ख़ुदाए हादी का काम है।

सीरिया के वसीम मुहम्मद साहिब उनके बारे में लिखते हैं कि जुमा के बाद मरहूम दिल मोह लेने वाले उस्लूब से दरस दिया करते थे। 2019 ई. से 2022 ई. तक उन्होंने सैक्रेटरी इशाअत के तौर पर ख़िदमत की। मरहूम को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब पढ़ने का बेहद शौक़ था बल्कि वह ख़ुद ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब में आने वाले मुश्किल शब्दों के अर्थ और शरह लिखते रहते थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तफ़सीर-ए-कबीर के अनुवाद का अध्यन कर के इस में से क़िसस् सुल अम्बिया को अलग निकाल कर क़दरे इख़तेसार के साथ एक किताबी शक्ल में पेश किया जो जमात की अरबी वेबसाइट पर मौजूद है और अफ़राद-ए-जमात अहमदिया और विशेषता बच्चे इस से बहुत इस्तिफ़ादा करते हैं।

उबादा बरबोश साहिब रिसाला अल् तकवा के ऐडीटर हैं, कहते हैं कि मरहूम बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे। ख़िलाफ़त के साथ ग़ैरमामूली मुहब्बत और वफ़ा का संबंध था। बुढ़ापा और अपनी मुलाज़मत होने के बावजूद मरहूम रज़ाकाराना तौर पर रिसाला अल् तकवा मैं ख़िदमत बजा लाते और जब भी कोई ज़िम्मेदारी दी जाती तो उसे अपने लिए सआदत समझते थे। सात साल मरहूम ने रिसाला अल्तकवा के पुराने शुमारे टाइप करने और उनको कमपीयूटराइज़ करने में हमारी बहुत मदद की है। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनके बच्चों के हक़ में उनकी दुआएं क़बूल फ़रमाए। दूसरा वर्णन है अज़ीज़ा नौशाबा मुबारक पत्नी अज़ीज़म जलीस अहमद मुरब्बी सिलसिला।

जो यहीं विभाग आरकाईव में और अल्हकम में हैं, उनकी पत्नी थीं। पिछले दिनों पाकिस्तान से वापस आते हुए रब्वाह और लाहौर के मध्य एक हादिसे का

शिकार हो गईं और उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पीछे रहने वालों में मियां और माता पिता के अतिरिक्त चार भाई और दो बहनें हैं। मरहूमा की वसियत की कार्रवाई हो रही थी कि अचानक वफ़ात हो गई है। बहरहाल वह कार्रवाई तो हो रही है, इन शा अल्लाह वसियत तो उनकी हो जाएगी। इस लिहाज़ से हैं।

उनके मियां अज़ीज़म जलीस अहमद लिखते हैं कि विनीत अल्लाह का शुक्रगुज़ार है कि अल्लाह ने विनीत को एक ऐसी बीवी से नवाज़ा जो बहुत सी ख़ूबियों की मालिक थी। उसने वाक़िफ़ ज़िंदगी से शादी करने का फ़ैसला किया। हमेशा मज़हब को तर्जीह दी। एक-बार भी मुझसे कभी कोई मुतालिबा नहीं किया। हमेशा दूसरों के लिए ख़ुशी का बायस बनती थी। जमात में मुख़्तलिफ़ ओहदों पर काम किया। अस्सिटैंट सैक्रेटरी माल और अस्सिटैंट सैक्रेटरी वसियत के तौर पर सहयोग की। बहुत मेहनती और लगन से काम करती थी। कहते हैं कि मेरे काम में भी मेरी मदद की। कभी मेरे जमाती काम में एतराज़ नहीं किया। उसने कभी मुतालिबा नहीं किया। दरहक़ीक़त वह वक़्फ़ की रूह को सही अर्थों में समझती थी। प्रत्येक रमज़ान में कम से कम तीन बार और कभी कभी चार बार क़ुरान-ए-पाक का दौर अनुवाद के साथ मुकम्मल करती थी। ख़िलाफ़त के लिए गहरी इज़्ज़त और मुहब्बत रखती थी।

उनकी माता ज़ेबुल् निसा साहिबा कहती हैं। मरहूमा मेरी सबसे छोटी बेटी थी। सबसे बहुत प्यार करने वाली और मिलनसार बची थी। हम सबको बहुत प्यार दिया। मेरे सब बच्चों में ज़्यादा समझदार थी। नमाज़ क़ुरआन की पाबंद थी। जमाअती कामों में सबसे आगे आगे रहती थी। हाफ़िज़ाबाद के गांव पीरकोट सानी में सदर लजना थी तो काम में बहुत मदद करती थी। रब्वाह आकर भी जमाती कामों में मदद की।

कामरान शाहिद भाई हैं, कहते हैं मरहूमा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मियां निज़ामुद्दीन साहिब बाफ़दा की पड़पोती थी। बड़ों और छोटों के साथ शफ़क़त से पेश आने वाली और सबसे प्यार करने वाली थी। और ख़िलाफ़त के साथ इंतेहाई इख़लास-ओ-वफ़ा का संबंध था। अल्लाह तआला मरहूमा के दर्जात बुलंद करे। सबको, उनके माता पिता को भी और पति को भी और अज़ीज़ों को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

अगला वर्णन श्रीमती रज़ीया सुल्ताना साहिबा पत्नी अब्दुल हमीद ख़ान साहब मरहूम रब्वाह का है जो अब्दुलक़य्यूम पाशा साहिब अमीर और मिशनरी इंचार्ज एवरी कोस्ट की माता थीं। उनकी पिछले दिनों 92 वर्ष की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं।

क़य्यूम पाशा साहिब लिखते हैं कि आप श्रीमान चौधरी हमीदुल्लाह साहिब मरहूम साबिक़ वकील आला तहरीक-ए-जदीद की बड़ी हमशीरा थीं। माता पिता ने 1929 ई. में अहमदियत क़बूल की थी। शुरू से ही रुहानी ख़ज़ायन के अध्यन का बेहद शौक़ था। इसलिए आपने ज़िंदगी में असंख्य बार रुहानी ख़ज़ायन का अध्यन मुकम्मल करने के साथ साथ तफ़सीर कबीर और दीगर जमाती लिटरेचर का भी अध्यन किया। अपने मुहल्ले वसयती के उलूम में सदर लजना और सैक्रेटरी माल के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। कहते हैं कि विनीत के कुछ रिश्तेदारों ने माता को कहा कि आपका एक ही बेटा है, पति आपके फ़ौत हो गए हैं, इस को जामिआ में मुरब्बी बनाने के बजाय जिसको केवल गुज़ारा अलाउनस मिलता है, किसी और फ़ील्ड में भेजें। इस पर माता ने जवाब दिया कि यह जामिआ में दाख़िल होगा। और जहां तक रिज़्क़ का संबंध है तो ख़ुदा तआला राज़िक़ है। मुझे इस पर भरोसा है। कहते हैं कि जूंही माता को पैंशन मिलती या किसी और माध्यम से आमदन होती तो फ़ौरन सैक्रेटरी माल के घर में अपना चंदा वसियत अदा कर के आतीं और कभी ऐसा नहीं हुआ कि सैक्रेटरी माल को चंदा के लिए हमारे घर आना पड़ा हो। उनके पीछे रहने वालों में एक बेटा और दो बेटियां हैं। अब्दुल क़य्यूम पाशा उनके बेटे जैसा कि मैं ने बताया आयोरी कोस्ट के मिशनरी इंचार्ज हैं और मैदान-ए-अमल में होने की वजह से माता के जनाज़े में शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला उनको सब्र और हौसला अता फ़रमाए। उनकी माता के दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला वर्णन श्रीमती बुशरा बेगम साहिबा पत्नी श्रीमान डाक्टर मुहम्मद सलीम साहिब लाहौर का है। यह मुहम्मद नईम अज़हर साहिब मुबल्लिग इंचार्ज सीरालियून की माता थीं। पिछले दिनों अठहत्तर वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में दो बेटे और पाँच बेटियां शामिल हैं। उनके बेटे नईम अज़हर साहिब मैदान-ए-अमल में होने की वजह से माता की नमाज़ जनाज़ा में शामिल नहीं हो सके। तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके। नईम अज़हर साहिब लिखते हैं कि माता पैदाइशी अहमदी नहीं थीं लेकिन रिश्तेदारों में अहमदियत थी और उनको सच्चाई की तलाश की तड़प थी। अल्लाह के हुज़ूर बहुत दुआएं करती थीं जिसके बाद उन्हें इतमेनान क़लब नसीब हुआ और अंततः 1964 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत की और सारी उम्र यह रिश्ता बड़ी वफ़ा से निभाया और अहमदियत के लिए प्रत्येक क़ुर्बानी के लिए हमेशा तैयार रहती थीं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बहुत दुआ-गो, पांचों समय नमाज़ों के इलावा तहज्जुद गुज़ार, बाहिम्मत और बुलंद हौसला बहादुर महिला थीं। ख़ामोशी से तकलीफ़ को बर्दाश्त कर लेती थीं परंतु ज़बान पर शिकवा नहीं लाती थीं। ख़लीफ़ा वक़्त की प्रत्येक माली क़ुर्बानी की तहरीक में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती थीं। जमाती चंदा बाक़ायदगी से अव्वल वक़्त में अदा कर देती थीं और बाद में इज़ाफ़ी चंदे भी दिया करती थीं। प्रत्येक ज़रूरतमंद की हसब-ए-इस्तिताअत मदद करतीं और कभी भी किसी को ख़ाली हाथ नहीं लौटाती थीं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी दुआएं भी उनके बच्चों के हक़ में क़बूल फ़रमाए।

अगला वर्णन श्रीमान रशीद अहमद चौधरी साहिब का है। यह नार्वे के थे। चौधरी ग़ुलाम हुसैन साहिब ओवर सीवर के यह बेटे थे। उनकी पिछले दिनों बयासी साल की उम्र में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अपनी बीमारी का बड़ी हिम्मत और बहादुरी और सब्र से मुक़ाबला किया। कुछ अरसा से काफ़ी बीमार थे। उनके पिता चौधरी ग़ुलाम हुसैन साहिब ओवर सीवर ने 1926 ई. में ख़ुद कादियान जा कर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत का शरफ़ हासिल किया था और इसके बाद ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी। उनको दारुल क़ज़ा कादियान और रब्वाह में क़ाज़ी के तौर पर ख़िदमत बजा लाने की तौफ़ीक़ मिली। इसी तरह मर्कज़ी इमारात की तामीर-ओ-निगहदाशत के सिलसिला में भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। चौधरी रशीद साहिब को भी अपने पिता साहिब के साथ रब्वाह में इबतेदाई दिनों में काम करने का बहुत अवसर मिला। ख़िलाफ़त-ए-सानिया और ख़िलाफ़त-ए-साल्सा के अदवार में भी कसर-ए-ख़िलाफ़त और अन्य जमाती इमारतों में इलेक्टरेशन के तौर पर उन्होंने बहुत काम किया। 1970 ई. में नार्वे चले गए। वहां जमाती ख़िदमात में हमेशा पेश पेश रहे। उनकी बेलौस ख़िदमात शामिल हैं। नार्वे के पहले मर्कज़ में भी आपकी बेलौस ख़िदमात शामिल हैं। जमात की कसीर रक़म उन्होंने वहां काम करके बचाई। लंबे अरसा तक जमाअत नार्वे के सैक्रेटरी उमूर-ए-आमा के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई।

उनके बेटे मुज़फ़्फ़र चौधरी और मुनव्वर चौधरी लिखते हैं कि ख़िलाफ़त से गहरी और बेपनाह मुहब्बत थी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला के नार्वे के दौरा जात की समस्त-तर ज़िम्मेदारी आपके सपुर्द हुआ करती थी। हुज़ूर रहमहुल्लाह तआला आपको अपना नार्वे का गाईड कहा करते थे और ख़ुतबा जुमा में भी आपकी ख़िदमत का ज़िक्र फ़र्मा चुके हैं। मुझसे भी ख़िलाफ़त के बाद इंतेहाई वफ़ा का संबंध था। पहले भी उनकी वाक़फ़ीयत थी लेकिन वह संबंध बाद में बहुत बढ़ गया। उनके पिता साहिब भी मेरे पिता के बड़े क़रीबी थे और संबंध वाले थे। बचपन से चौधरी ग़ुलाम हुसैन साहिब को हमने देखा है कि हमेशा मुस्कुराते रहने वाले थे और बड़ी अच्छी तबीयत थी और चौधरी रशीद साहिब की भी आदतें अपने पिता से काफ़ी मिलती थीं।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए। बिना भेदभाव मज़हब-ओ-मिल्लत मख़लूक़-ए-ख़ुदा की हमदर्दी के लिए हमेशा तैयार रहते थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा दो बेटे और चार बेटियां शामिल हैं और यह श्रीमान इनामुल् हक़ कौसर साहिब अमीर जमात आस्ट्रेलिया और मिशनरी इंचार्ज आस्ट्रेलिया के बहनोई थे। अल्लाह तआला सबको सब्र और हौसला अता फ़रमाए। नमाज़ के बाद जैसा कि मैं ने कहा उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

# ख़ुत्बः जुमअः

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर क़ुर्बान। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सलामत हैं तो मुझे किसी नुक़्सान की पर्वा नहीं

उहद की जंग के दौरान एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों बराबर तीर चलाते जाओ

साद रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी आख़िरी उम्र तक इन शब्दों को निहायत फ़ख़र के साथ वर्णन करते थे
ख़ुदा तआला की मर्ज़ी थी कि उहद के शुहदा उहद में ही दफ़न हों

बताओ कि अगर ऐसे लोगों के विषय में यह न फ़रमाया जाता कि مِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَه तो दुनिया में और कौन सी क़ौम थी जिसके विषय में यह शब्द बोले जाते

वे लोग दरअसल ख़ुदा तआला के आशिक़ थे और चूँकि ख़ुदा तआला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्यार करता था इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्यार करते थे

मक्का वालों को जो बदर में शिकस्त मिली उसको कमज़ोरी, बेचेनी और घबराहट से वसूल किया और मदीना ने अपनी उहद की मुसीबत को बेनज़ीर सब्र-ओ-ईमान और सब्र, धैर्य शुजाअत से वसूल किया। .. मदीना की फ़ौज को उहद में जो नुक़्सान पहुंचा उसकी वजह से मदीना के बाशिंदों में से किसी को घबराहट, इज़्तेराब और कमज़ोरी का कोई निशान नहीं था

उहद की जंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुबूलियत-ए-दुआ और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो और सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ुर्बानियों और इशके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

श्रीमान ताहिर इक़बाल चीमा साहिब इब्न ख़िज़र हयात चीमा साहिब सदर जमात अहमदिया चक चौरासी (84) फ़तह ज़िला बहावलपुर की शहादत। मरहूम का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 08 मार्च 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

उहद की जंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ की कबूलियत।

जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबी हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ की क़बूलियत के लिए की थी। इस के वाक़िया का इस प्रकार वर्णन मिलता है। आयशा बिंत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने पिता हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। वह फ़रमाते हैं जब लोगों ने पलट कर हमला किया तो मैं एक तरफ़ हो गया। मैं ने कहा उनको ख़ुद से हटा दूँगा। या तो मैं ख़ुद नजात पा जाऊँगा और या मैं शहीद हो जाऊंगा तो अचानक मैं ने एक लाल चेहरे वाले व्यक्ति को देखा। कहते हैं क़रीब था कि मुशरेकीन उन पर ग़ालिब हो जाएं तो इस व्यक्ति ने अपना हाथ कंकरियों से भर कर उनको मारा तो अचानक मेरे और इस व्यक्ति के मध्य मिक़दाद आ गए। मैं ने मिक़दाद से पूछने का इरादा किया तो उन्होंने मुझे कहा कि साद! यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे और फिर कहा कि तुझे बुला रहे थे। मैं खड़ा हुआ और मुझे ऐसा लगा गोया कि मुझे कोई तकलीफ़ ही नहीं पहुंची। पहले ज़ख़मी हालत में थे या तकलीफ़ थी। कहते हैं उस के बाद मैं उस आवाज़ को सुनकर एक दम खड़ा हुआ और मुझे लगा जैसे मुझे कोई तकलीफ़ नहीं। कहते हैं कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने सामने बिठा लिया। और मैं तीर मारने लगा तो मैं कहता अल्लाह! तेरा तीर है, तू इस को अपने दुश्मन को मार दे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते हे अल्लाह तू साद की दुआ क़बूल कर ले। हे अल्लाह साद के निशाने को दरुस्त कर दे। हे साद तुझ पर मेरे माँ और बाप फ़िदा हूँ। अतः मैंने जो तीर भी चलाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के साथ ये फ़रमाते थे। हे अल्लाह इस के निशाने को दरुस्त कर दे और इस की दुआ को क़बूल कर ले। यहाँ तक कि जब में अपने तरकश के तीर चला कर फ़ारिग़ हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने तरकश के तीर फैला दिए और मुझे एक बग़ैर पैकान और बग़ैर पर के तीर दिया और न उसका कोई सिरा था न पीछे से सही तरह उस की बनावट थी। कहते हैं वह तीर दिया और वह तीर दूसरे तीरों से ज़्यादा तेज़ निकला। अल्लामा ज़हरी ने लिखा है कि उस दिन साद ने एक हज़ार तीर चलाए थे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 200-201 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में यूं लिखा है कि साद बिन वक्कास को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद तीर पकड़ाते जाते थे और हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ये तीर दुश्मन पर बे तहाशा चलाते जाते थे।

एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों बराबर तीर चलाते जाओ। साद रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी आख़िरी उम्र तक इन शब्दों को निहायत गर्व के साथ वर्णन किया था।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ : 495)

एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद की जंग के दिन अपने तरकश से तीर निकाल कर मेरे लिए बिखेर दिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तीर चुलाओ। तुझ पर मेरे माँ बाप फ़िदा हों।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी बाब अज़ हिम्मत तायफ़तान मिनकुम हदीस : 4055)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुक्म से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ालिद बिन वलीद की कमान में पहाड़ पर हमले को किस तरह नाकाम बनाया।

इस बारे में इस प्रकार वर्णन मिलता है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की जमाअत के साथ इस चट्टान पर क़ियाम फ़र्मा थे। अचानक क़ुरैश की एक जमात पहाड़ के ऊपर पहुंच गई। इस जमाअत में ख़ालिद बिन वलीद भी थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुश्मन को ऊपर देख कर दुआ की कि اَللّٰهُمَّ إِنَّهٗ لَا يَنْبَغِي لَهُمْ أَنْ يَعْلُوْنَا، اَللّٰهُمَّ لَا قُوَّةَ لَنَا إِلَّا بِكَ۔ । हे अल्लाह उनके लिए जायज़ नहीं कि वह हम पर ग़ालिब आएं। हे अल्लाह हमारी ताक़त वक़्त नहीं है मगर सिर्फ तेरे ही द्वारा। इसी वक़्त हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुहाजेरीन की एक जमाअत के साथ उन लोगों का मुक़ाबला किया और उन्हें पीछे धकेल कर पहाड़ी से नीचे उतरने पर मजबूर कर दिया। इस वाक़िया के सिलसिला में अल्लाह तआला का यह इरशाद नाज़िल हुआ وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ(आले इमरान : 140)और कमज़ोरी न दिखाओ और ग़म न करो जबकि यक़ीनन तुम ही ग़ालिब आने वाले हो अगर तुम मोमिन हो।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 323 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो इस वाक़िया को वर्णन करते हुए कहते हैं कि "जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दर्रा में पहुंच गए तो क़ुरैश के एक दस्ते ने ख़ालिद बिन वलीद की कमान में पहाड़ पर चढ़ कर हमला करना चाहा लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने चंद मुहाजेरीन को साथ लेकर उसका मुक़ाबला किया और उसे पसपा कर दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए. पृष्ठ 497)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़ख़मी होने के बावजूद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़िक्र करने बारे में एक रिवायत में है हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जब यौम-ए-उहद का वर्णन करते तो फ़रमाते। वह दिन सारे का सारा तलहा का था। फिर उसकी तफ़सील बताते कि मैं इन लोगों में से था जो उहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ वापस लौटे थे तो मैं ने देखा कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए लड़ रहा है। रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि आप अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बचा रहा था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने काश! तल्हा हो। मुझ से जो अवसर रह गया सो रह गया और मैंने दिल में कहा कि मेरी क़ौम में से कोई व्यक्ति हो तो यह मुझे ज़्यादा पसंदीदा है। बहरहाल कहते हैं कि मेरे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मध्य एक व्यक्ति था जिसको में नहीं पहचान सका हालाँकि मैं इस व्यक्ति की निसबत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़्यादा क़रीब था और वह इतना तेज़ चल रहा था कि मैं इतना तेज़ न चल सकता था। तो देखा कि वह व्यक्ति अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो थे। फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का निचला चौथा दाँत अर्थात सामने वाले दो दाँतों और नोकीले दाँत के मध्य वाला दाँत टूट चुका था और चेहरा ज़ख़मी था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र बाल में कवच की कड़ियाँ धँस चुकी थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम दोनों अपने साथी की मदद करो। इससे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुराद तलहा थी और उनका ख़ून बहुत बह रहा था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बजाय यह कि मुझे देखो, फ़रमाया कि तलहा को जा के देखो।

(सबलुल् हुदा भाग 4 पृष्ठ 199 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

उनका क्या हाल है उनकी ख़ातिर करो देखो उनके ज़ख़मों को ठीक करने की कोशिश करो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़ियाद बिन सकन से मुहब्बत-ओ-शफ़क़त का सुलूक और उन की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रमे का वर्णन भी मिलता है। इस बारे में इब्न-ए-इसहाक ने लिखा है। जब कुफ़्फ़ार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को घेर लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। مَنْ رَجُلٌ يَّشْرِيْ لَنَا نَفْسَهٗ कौन व्यक्ति है जो हमारे लिए ख़ुद को बेच दे? तो ज़ियाद बिन सकन पाँच अंसारी सहाबा के साथ खड़े हुए और कुछ लोग कहते हैं कि वह उमारा बिन यज़ीद बिन सकन थे। तो यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दाद-ए-शुजाअत देते-देते एक एक कर के शहीद होते रहे यहाँ तक कि उनमें से आख़िरी ज़ियाद या अम्मारा थे। ये लड़ते रहे यहां तक कि उनको कई ज़ख़म लगे फिर मुस्लमानों की एक जमात लौट आई और मुशरेकीन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से धकेल दिया तो उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। ज़ियाद बिन सकन को मेरे क़रीब करो तो सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना क़दम मुबारक उनका तकिया बना दिया और उनकी मौत इस हाल में हुई कि उनका बाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक पर था और उनके जिस्म पर चौदह घाव आए थे।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 203 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

यह वाक़ियात पहले भी वर्णन कर चुका हूँ। कुछ में कोई नई बातें होती हैं, चंद एक नए फ़िक़रे होते हैं। कुछ और अंदाज़ होता है इसलिए दुबारा वर्णन कर देता हूँ।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उहद से मदीना के विषय में रिवायात में वर्णन है कि ग़ज़वा उहद के दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शुहदा-ए उहद की तकफ़ीन-ओ-तदफ़ीन के बाद मदीना वापस तशरीफ़ ले आए।

(उद्धृत दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 55 नाशिर बज़म-ए-इक़बाल लाहौर)

(सबलुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 227 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

और यह वर्णन भी मिलता है कि मग़रिब की नमाज़ मदीना में पढ़ी गई। इसलिए एक लेखक ने लिखा है कि मैदान-ए-उहद से मदीना वापसी हुई तो नमाज़ मग़रिब का वक़्त होने पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अज़ान दी। नमाज़ की अदायगी के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत साद बिन उबाह रज़ियल्लाहु अन्हो और साद बिन माज़ अन्हो के सहारे मस्जिद तशरीफ़ लाए। नमाज़ अदा करके आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फिर घर तशरीफ़ ले गए। नमाज़ इशा का वक़्त होने पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने फिर अज़ान कही लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नींद की वजह से तशरीफ़ नहीं ला सके। आराम फ़र्मा रहे थे, नींद ले रहे थे तो इस अज़ान के बाद जो नमाज़ का वक़्त था वह उस पर तशरीफ़ नहीं ला सके। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इंतेज़ार में बैठे रहे। यह नहीं कि वापस आ के नमाज़ पढ़ा दी बल्कि उनके इंतेज़ार में बैठे रहे। रात का काफ़ी हिस्सा गुज़र जाने पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नमाज़ के लिए आवाज़ दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हालत अब पहले से क़दरे बेहतर थी। इशा की नमाज़ पढ़ा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर तशरीफ़ ले गए। नमाज़ की जगह से घर तक अस्हाब-ए-रसूल सफ़ें बनाए खड़े थे। उनके मध्य में से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले ही घर को चले गए। अब की बार किसी सहारे की ज़रूरत नहीं पड़ी। पहले मग़रिब की नमाज़ पर आए थे तो सहारे से आए थे फिर आराम फ़रमाया। इशा की नमाज़ लेट पढ़ी और फिर नहीं आते न जाते सहारे की ज़रूरत नहीं पड़ी। इस दौरान में कुछ औरतों को हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए रोते तड़पते पाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस अमल से रोक दिया जैसा कि पिछले ख़ुतबा में इस का वर्णन भी हो चुका है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर तशरीफ़ ले जाने पर सिवाए पहरेदारों के समस्त पुरुष और महिलाएं अपने अपने घरों को चले गए।

(उद्धृत दायरा मआरिफ़ सीरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 63 नाशिर बज़म-ए-इक़बाल लाहौर)

फिर वह जो डयूटी पर मौजूद थे वह वहां रहे।

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो यूं लिखते हैं कि "सारे इंतेज़ामात से फ़ारिग़ हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शाम के क़रीब मदीना की तरफ़ रवाना हुए।" सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए. पृष्ठ 502) अर्थात कि सारे काम हुए। यह नहीं कि ज़ख़मी थे तो फ़ौरी तौर पर आ गए बल्कि समस्त काम सरअंजाम दिए।

मदीना की औरतों का सब्र और रज़ा का उदाहरण इस बारे में पहले भी मैं औरतों की मिसालें दे चुका हूँ। कुछ और मिसालें हैं।

हज़रत हम्न बिनत हजश रज़ियल्लाहु अन्हा के जज़बात क्या थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब ग़ज़वा उहद के बाद मदीना लौटे तो आप सल्लल्लाहो

अलैहि व सल्लम को हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी हज़रत हम्ना बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हो मिलीं। लोगों ने उन्हें उनके भाई हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की ख़बर दी। इस पर उन्होंने इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊनपढ़ा और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। फिर लोगों ने उन्हें उनके मामूं हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की ख़बर दी। इस पर उन्होंने इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। फिर लोगों ने उनके पति हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की इत्तिला दी इस पर वह रोने लगीं और बेचैन हो गईं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत के लिए उसके पति का एक ख़ास मुक़ाम-ओ-मर्तबा होता है।

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 396 प्रकाशन दारुल इब्ने हज़म बेरूत)

एक दूसरी रिवायत में हज़रत हम्ना बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में वर्णन मिलता है कि जब उनसे कहा गया कि तुम्हारा भाई शहीद कर दिया गया है तो उन्होंने कहा अल्लाह इस पर रहम करे और कहा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। लोगों ने कहा तुम्हारे पति भी शहीद कर दिए गए हैं। कहने लगीं कि हाय अफ़सोस। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत को पति से ऐसा संबंध है जो किसी और से नहीं।

(सुंन इब्ने माजा किताब अल्जनायज़ बाब माजाआ फ़ील् बका अल्मियत हदीस : 1590)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे ने भी एक ख़िताब में हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत के इस वाक़िया का अपने अंदाज़ में वर्णन किया है। जिसमें हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वाक़िया और उनकी शहादत पर उनकी बीवी की जो भावनाएं थी उनका वर्णन किया था। कहते हैं कि वे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो या सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हा जिनके अक़रबा-ए- की संख्यान एक से ज़्यादा होती उनको ठहर ठहर कर इस अंदाज़ में ख़बर देते कि सदमा यकलख़्त दिल को मग़लूब न कर ले अर्थात उन शुहदा की संख्या जिनके क़रीबी रिश्तेदार थे अगर एक से ज़्यादा होती तो यह नहीं कि सारों के बारे में एक दम बता दिया बल्कि आहिस्ता-आहिस्ता बताते थे। पहले एक के बारे में बताया। फिर दूसरे के। फिर तीसरे के। इसलिए कि ज़्यादा सदमा न पहुंचे। इसलिए जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन हम्ना बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हा हाज़िर हुईं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे हम्ना! तू सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! किस के सवाब की? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अपने मामूं हम्ज़ा की। तब हज़रत हम्ना जहश रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। غَفَرَ لَهٗ وَرَحِمَهٗ هَنِيْئًا لَهُ الشَّهَادَةَ इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम्ना! सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उसने अर्ज़ की कि यह किस के सवाब की? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने भाई अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो की। इस पर हम्ना ने फिर यही कहा कि इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। غَفَرَ لَهٗ وَرَحِمَهٗ هَنِيْئًا لَهُ الشَّهَادَةَ फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हे हम्ना! सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उन्होंने अर्ज़ किया हुज़ूर यह किस के लिए? फ़रमाया मसअब बिन उमेर के लिए। इस पर हम्ना ने कहा हाय अफ़सोस। यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वाक़ई पति का बीवी पर बड़ा हक़ है जो किसी और का नहीं। हज़रत हम्ना जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि तू ने सिर्फ पति के लिए ऐसा कलिमा क्यों कहा? इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे उसके बच्चों की यतीमी याद आ गई थी जिससे मैं परेशान हो गई और परेशानी की हालत में यह कलिमा मेरे मुँह से निकल गया। यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसअब की औलाद के हक़ में दुआ की कि हे अल्लाह उनके सिर परस्त और बुज़ुर्ग उन पर शफ़क़त और मेहरबानी करें और उनके साथ अच्छे सुलूक से पेश आवें।

(उद्धृत ख़ताबात ताहिर क़बल अज़ ख़िलाफ़त पृष्ठ 363)

हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हो जिनका वर्णन मैं पिछले किसी ख़ुतबा में कर चुका हूँ उनके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़-ओ-मुहब्बत और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के बारे में इस प्रकार वर्णन मिलता है कि उनके पति भाई और बेटे की शहादत का जब उन्हें पता चला कि तीनों शहीद हो गए थे जैसा कि वर्णन पहले भी हुआ था तो ये तीनों को पहले मदीना लाने के लिए लेकर आरही थीं लेकिन फिर वापस ले गईं। और इस की तफ़सील यूं वर्णन है कि :

ख़ुदा तआला की मर्ज़ी थी कि उहद के शुहदा उहद में ही दफ़न हों।

यहां तक तो पहले भी मैं बता चुका हूँ। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा जो उहद की ख़बर लेने के लिए निकली थीं उन्होंने हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा से जो उहद से आ रही थीं ख़ैर मालूम की तो इस पर हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो जवाब दिया उस का जैसा कि मैंने कहा पिछले ख़ुतबा में वर्णन कर चुका हूँ मज़ीद उसकी तफ़सील यूं है कि हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बख़ैरियत हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद प्रत्येक मुसीबत आसान है। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैरीयत से हैं तो फिर कोई ऐसी बात नहीं। इस के बाद हज़रत हिंद ने यह आयत पढ़ी

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۔ وَ كَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۔ وَ كَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا

(अल् अहज़ाब : 26)

अर्थात और अल्लाह ने उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया उनके ग़ैज़ समेत इस तरह लौटा दिया कि वह कोई भलाई हासिल नहीं कर सके और अल्लाह मोमिनों के हक़ में क़िताल में काफ़ी हो गया और अल्लाह बहुत क़वी और कामिल ग़लबा वाला है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दरयाफ़त किया कि ऊंटनी पर कौन कौन हैं? तब हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया कि मेरा भाई है, मेरा बेटा ख़िलाद है और मेरे पति अम्र बिन जमूह हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दरयाफ़त किया कि तुम उन्हें कहाँ ले जाती हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि उन्हें मदीना में दफ़न करने के लिए ले जा रही हूँ। फिर वह अपने ऊंट को हाँकने लगें तो ऊंट वहीं ज़मीन पर बैठ गया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि इस पर वज़न ज़्यादा है? जिस पर हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा कहने लगीं कि ये तो दो ऊंटों जितना वज़न उठा लेता है लेकिन इस वक़्त यह उस के बिल्कुल उलट कर रहा है। फिर उन्होंने ऊंट को डाँटा तो वो खड़ा हो गया। जब उन्होंने उस का रुख मदीना की तरफ़ किया तो वह फिर बैठ गया फिर जब उन्होंने उस का रुख उहद की तरफ़ फेरा तो ऊंट जल्दी जल्दी चलने लगा। फिर हज़रत हिन्द रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आईं और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस वाक़िया की ख़बर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह ऊंट मामूर किया गया है अर्थात उस को अल्लाह तआला की तरफ़ से इसी काम पर लगाया गया था कि यह मदीना की तरफ़ न जाए बल्कि उहद की तरफ़ ही रहे। फ़रमाया कि क्या तुम्हारे पति ने जंग पर जाने से पहले कुछ कहा था? कहने लगीं जब अम्र उहद की जानिब रवाना होने लगे थे तो उन्होंने क़िबला रुख हो कर यह कहा था कि अल्लाह! मुझे मेरे अहल की तरफ़ शर्मिंदा कर के नहीं लौटाना और मुझे शहादत नसीब करना। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसी वजह से ऊंट नहीं चल रहा था। फ़रमाया कि हे अंसार के गिरोह तुम में से कुछ ऐसे नेको कारलोग हैं कि अगर वह ख़ुदा की क़सम खा कर कोई बात करें तो ख़ुदा तआला उनकी वह बात ज़रूर पूरी करता है और अम्र बिन जम्वा भी उनमें से एक हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अम्र बिन जम्वा की बीवी को फ़रमाया। हे हिंद जिस वक़्त से तेरा भाई शहीद हुआ है इस वक़्त से फ़रिश्ते इस पर साया किए हुए हैं और इंतेज़ार में हैं कि उसे कहाँ दफ़न किया जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन शुहदा की तदफ़ीन तक वहीं रुके रहे। फिर फ़रमाया हे हिंद अम्र बिन जमू, तेरा बेटा ख़िलाद और तेरा भाई अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नत में बाहम दोस्त हैं। इस पर हिंद ने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे भी उनकी रिफ़ाक़त में पहुंचा दे।

(किताबुल् मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 232-233 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

साद बिन अबी वक्क़ास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू दीनार की एक औरत के पास से गुज़रे जिसका पति, भाई और बाप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उहद के युद्ध में शरीक हुए थे और वह सब शहीद हो गए थे। जब उनकी ताज़ियत उस औरत से की गई तो उसने पूछा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? तो लोगों ने कहा कि हे उम्मे अमुक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ठीक हैं और अल्हम्दुलिल्ला ऐसे ही हैं जैसे कि तू पसंद करती है। तो इस औरत ने जवाब दिया कि मुझे दिखाओ। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखना चाहती हूँ तो फिर उस औरत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ इशारा कर के दिखाया गया। जब उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा तो कहने लगी कि :

हर मुसीबत आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद मामूली है।

(सीरत इब्ने हशशम पृष्ठ 545 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक और रिवायत में इस औरत के बेटे के शहीद होने का वर्णन भी मिलता है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि उहद की जंग के अवसर पर जब अहल-ए-मदीना बहुत घबराहट का शिकार हो गए क्योंकि यह अफ़्वाह फैल गई थी कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहीद कर दिया गया है यहाँ तक कि मदीना के गली कूचों में चीख़-ओ-पुकार मच गई थी तो एक अंसारी ख़ातून परेशान हो कर घर से निकली। उसने आगे अपने भाई, बेटे और पति की लाश देखी। रावी कहते हैं कि मैं नहीं जानता कि पहले उसने किस को देखा था परंतु जब वह आख़िरी के पास से गुज़री तो उसने पूछा यह कौन हैं? लोगों ने बताया कि तेरा भाई, तेरा पति और तेरा बेटा है। उसने पूछा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? लोगों ने कहा वह आगे हैं। वह औरत चलती हुई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंची और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दामन थाम लिया और फिर कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर क़ुर्बान जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सलामत हैं तो मुझे किसी नुक़्सान की कोई पर्वा नहीं।

(मोअज्जमुल् वस्तु भाग 5 पृष्ठ 329-330हदीस7499 दारुल फ़िकर बेरूत)

एक कथन के अनुसार इस औरत का नाम सुमेरा पुत्री क़ैस था जो नुमान बिन अब्दे अम्र की माता थीं

(किताबुल् मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 251 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक अवसर पर इस वाक़िया का वर्णन इस तरह किया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो में इस बहादुरी की मिसालें बहुत कसरत से मिलती हैं। दुनयवी लोगों में तो करोड़ों लोगों और सैंकड़ों मुल्कों में से एक-आध मिसाल ऐसी मिल सकेगी परंतु सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में, चंद हज़ार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में सैंकड़ों मिसालें मिलती हैं। ठीक है दूसरों में मिल जाती हैं लेकिन करोड़ों में एक-आध मिसाल लेकिन यहां हज़ारों में सैंकड़ों मिसालें। कैसी आला दर्जा की यह मिसाल है जो एक औरत से संबंध रखती है।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं कई दफ़ा उसे वर्णन कर चुका हूँ और जो इस काबिल है कि प्रत्येक मजलिस में सुनाई जाए और इस की याद को ताज़ा रखा जाए। कुछ वाक़ियात ऐसे शानदार होते हैं कि बार-बार सुनाए जाने के बावजूद पुराने नहीं होते। ऐसा ही वाक़िया उस औरत का है जिसने उहद की जंग के अवसर पर मदीना में यह ख़बर सुनी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं वह मदीना की दूसरी औरतों के साथ घबरा कर बाहर निकली और जब पहला सवार उहद से वापस आते हुए उसे नज़र आया तो उसने उस से दरयाफ़त किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उसने कहा कि तुम्हारा पति मारा गया है। उसने कहा मैंने तुमसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ प्रश्न किया है और तुम मेरे पति की ख़बर सुना रहे हो। उसने फिर कहा कि तुम्हारा बाप भी मारा गया है परंतु इस औरत ने कहा मैं तुम्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ पूछती हूँ और तुम बाप का हाल बता रहे हो। इस सवार ने कहा कि तुम्हारे दोनों भाई भी मारे गए परंतु इस औरत ने फिर यही कहा कि तुम मेरे सवाल का जवाब जल्द दो। मैं रिश्तेदारों के मुताल्लिक़ नहीं पूछती। मैं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ पूछती हूँ। इस सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु का दिल चूँकि संतुष्ट था और जानता था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बख़ैरियत हैं। इसलिए उसके नज़दीक उस औरत के लिए सबसे अहम सवाल यही था कि इस के परिजनों की मौत से उसे आगाह किया जाए मगर इस औरत के नज़दीक सबसे प्यारी चीज़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात थी। इसलिए उसने झिड़क कर कहा कि तुम मेरे सवाल का जवाब दो। इस पर उसने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो ख़ैरीयत से हैं। यह सुन कर उस औरत ने कहा कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा हैं तो फिर मुझे कोई ग़म नहीं, ख़ाह कोई मारा जाए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि और ज़ाहिर है कि इस मिसाल के सामने इस बुढ़िया की मिसाल की कोई हक़ीक़त नहीं जिसके मुताल्लिक़ ख़ुद नामा निगार को एतराफ़ है। अर्थात इस बुढ़िया का वर्णन जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो मिसाल दे रहे हैं। वह दूसरी जंग-ए-अज़ीम में जर्मनी की एक बूढ़ी औरत है जिसका बेटा एक जंग में मारा गया था और उसने एक मस्नूई क़हक़हा लगा कर इस ख़बर पर रद्द-ए-अमल का इज़हार किया था। यह ख़बर उन दिनों अख़बारों में आई थी कि यह देखो उस औरत ने कितने बड़े सब्र का मुज़ाहरा किया है। उस का बेटा मारा गया लेकिन उसने कोई ग़म नहीं किया और बड़ा क़हक़हा लगा कर उस पर सब्र का इज़हार किया, रद्दे अमल ज़ाहिर किया। इस का वर्णन आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़र्मा रहे थे। तो फ़रमाते हैं यह इज़हार बोझ से दबा हुआ मालूम होता है गो उस औरत ने क़हक़हा तो लगाया लेकिन ये इज़हार जो है यह बोझ से दबा हुआ मालूम होता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि वह दिल में रो रही थी अर्थात वह जर्मन औरत दिल में तो रो रही थी लेकिन ज़ाहिरी तौर पर उसने जुर्रत का इज़हार किया कि कोई बात नहीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि परंतु सहाबिया का वाक़िया यह नहीं है, यह नहीं है कि उसने ज़बत किया हुआ था और दिल में रो रही थी और ज़ाहिर नहीं कर रही थी बल्कि वह सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा तो दिल में भी ख़ुश थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा हैं लेकिन इस औरत के दिल पर सदमा ज़रूर था कि वह उसे ज़ाहिर नहीं करना चाहती थी। अर्थात वह जर्मन औरत के दिल में तो बहरहाल सदमा था परंतु इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा के दिल पर तो कोई सदमा भी नहीं था और यह ऐसी शानदार मिसाल है कि दुनिया की तारीख़ उस की कोई नज़ीर पेश नहीं कर सकती और बताओ कि अगर ऐसे लोगों के मुताल्लिक़ यह न फ़रमाया जाता कि مِنۡهُمۡ مَّنۡ قَضٰى نَحۡبَهٗ तो दुनिया में और कौन सी क़ौम थी जिसके मुताल्लिक़ यह शब्द कहे जाते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं जब इस औरत का वाक़िया पढ़ता हूँ तो मेरा दिल उसके विषय में अदब और एहतेराम से भर जाता है और मेरा दिल चाहता है कि मैं इस मुक़द्दस औरत के दामन को छूओं और फिर अपने हाथ आँखों से लगाऊँ कि उसने मेरे महबूब रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए अपनी मुहब्बत की एक बेमिसल यादगार छोड़ी है।

(उद्धृत ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 20 पृष्ठ 542-543)

फिर उसी इशक़-ओ-मुहब्बत का वर्णन करते हुए एक और जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह वर्णन फ़रमाया "देखो इस औरत को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किस क़दर इशक़ था। लोग उसे यके बाद दीगरे बाप, भाई और पति की वफ़ात की ख़बर देते चले गए लेकिन वह जवाब में प्रत्येक दफ़ा यही कहती चली गई कि मुझे बताओ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उद्देश्य यह भी एक औरत ही थी जिसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस क़दर इशक़ का मुज़ाहरा किया।"

(करूने उला की मुस्लमान महिलाओं का नमूना, अनवारुल उलूम भाग नंबर 25 पृष्ठ 440)

फिर एक दूसरी जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हो इस बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं कि ज़रा इस हालत का नक़्शा अपने ज़हनों में अब खींचो। तुम में से प्रत्येक ने मरने वाले को देखा होगा। कोई न कोई क़रीबी मरता है किसी ने अपनी माँ को, किसी ने बाप को, किसी ने भाई को, बहन को मरते देखा होगा। ज़रा वह नज़ारा तो याद करो कि किस तरह अपने अज़ीज़ों के हाथों में और घरों में अच्छे से अच्छे खाने पका कर और खा कर, ईलाज करवा कर और ख़िदमत करा कर मरने वालों की हालत क्या होती है और किस तरह घर में क़ियामत बरपा होती है और मरने वालों को सिवाए अपनी मौत के किसी दूसरी चीज़ का ख़्याल तक भी नहीं होता परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दिलों में ऐसा इशक़ पैदा कर दिया था कि उन्हें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाबला में किसी और चीज़ की पर्वा ही नहीं थी। परंतु यह इशक़ सिर्फ इस वजह से था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला के प्यारे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुहम्मद होने की वजह से यह इशक़ नहीं था बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रसूल अल्लाह होने की वजह से यहअ इशक़ था। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि वे लोग दरअसल ख़ुदा तआला के आशिक़ थे और चूँकि ख़ुदा तआला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्यार करता था इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्यार करते थे।

और सिर्फ मर्द ही नहीं बल्कि औरतों को भी देख लो उनके दिलों में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात के साथ क्या मुहब्बत और क्या इशक़ था। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि यह मुहब्बत थी जो ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ उन लोगों के दिलों में पैदा कर दी थी परंतु बावजूद उस के वह ख़ुदा तआला को प्रत्येक चीज़ पर मुक़द्दम रखते थे और यही तौहीद थी जिसने उनको दुनिया में प्रत्येक जगह ग़ालिब कर दिया था। ख़ुदा तआला के मुक़ाबला में वे न माँ बाप की पर्वा करते थे और न बहन भाईयों की और न बीवियों की और खाविंदों की। उनके सामने एक ही चीज़ थी और वह यह कि उनका ख़ुदा उनसे राज़ी हो जाए। इसी लिए अल्लाह तआला ने उनके लिए रज़ी अलल्लाहु उन फ़र्मा दिया। उन्होंने अल्लाह तआला को प्रत्येक चीज़ पर मुक़द्दम कर लिया और अल्लाह

तआला ने उनको मुक़द्दम किया। परंतु हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बाद में मुस्लमानों की यह हालत न रही और अब अगर उनको अल्लाह तआला से संबंध है तो महिज़ दिमाग़ी है। दिमाग़ी तौर पर हम कहते हैं बड़ा संबंध है। दिमाग़ में ज़रूर है कि हम अल्लाह तआला को मानते हैं। तौहीद के क़ायल हैं। दिल में यह नहीं है। दिल कहीं और तरफ़ लगा हुआ है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन अगर उनके सामने किया जाए तो उनके दिलों में मुहब्बत की तारें हिलने लगते हैं। (उद्धृत ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 23 पृष्ठ 46-47) यह सब कुछ है लेकिन तौहीद की जो असल सूरत होनी चाहिए वह नहीं है।

एक सीरत निगार लिखता है। बिला-शुबा मदीना की मुसीबत बड़ी दर्दमंद मुसीबत थी लेकिन मक्का और मदीना के मध्य अपनी मुसीबत के वसूल करने में दूर दराज़ का फ़र्क़ था। बड़ी मुसीबत थी। मदीना में हालात बड़े ख़राब थे लेकिन अगर मक्का और मदीना का मुक़ाबला किया जाए। वहां भी मुसीबत थी। मक्का वालों को भी ख़तरा रहता था लेकिन बड़ा दूर दराज़ का फ़र्क़ था और फ़र्क़ क्या था? मुशरेकीन-ए-मक्का ने अपनी बदर की मुसीबत को कुछ कमज़ोरी, इज़तेराब और घबराहट से वसूल किया।

मक्का वालों को बदर में जो शिकस्त मिली उसको कमज़ोरी, इज़तेराब और घबराहट से वसूल किया और मदीना ने अपनी उहद की मुसीबत को बेनज़ीर सब्र-ओ-ईमान और सब्र, सबात-ओ-शुजाअत से वसूल किया।

अब उहद में मुस्लमानों को भी काफ़ी नुक़्सान पहुंचा लेकिन उनका यह बेनज़ीर सब्र था और ईमान था और सबात-ओ-शुजाअत थी जिससे उन्होंने इस को वसूल किया।

मदीना की फ़ौज को उहद में जो नुक़्सान पहुंचा उसकी वजह से मदीना के बाशिंदों में से किसी पर घबराहट, इज़तेराब और कमज़ोरी का कोई निशान नहीं था।

और इस की सबसे बड़ी दलील यह है कि एक मुस्लमान औरत ने मार्का उहद में अपने बेटे, पति, भाई और बाप को खो दिया और वह हैरान नहीं हुई और न ही इस मुसीबत ने उसे एतिदाल की हदूद से बाहर किया और वह बनू दीनार की औरत थी जो मैदान-ए-कार-ज़ार की तरफ़ गई और उसने अपने बेटे, पति, भाई और बाप को ख़ून में लुथड़े हुए मक़्तूल देखा तो उसने तवाज़ुन खोना तो कुजा पर्वा ही नहीं की और वह सिर्फ उस इन्सान के मुताल्लिक़ पूछती रही जो इन चारों से बढ़कर उसे महबूब था और वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। जब उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलामत देखा तो उसने कहा प्रत्येक मुसीबत ख़ाह वह कितनी ही बड़ी हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सलामती के मुक़ाबले में छोटी है।

(उहद के युद्ध अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 237-238 नफ़ीस अकैडमी कराची)

बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा फ़लस्तीन के लोगों के लिए दुआ करे।

अल्लाह तआला उनके लिए आसानियां पैदा फ़रमाए। दुश्मन तो अपनी समस्त-तर घटिया सोचो और हरकतों के ज़रीया उन्हें तबाह करने पर तुला हुआ है। बड़ी ताक़तें जंग को रोकने की बजाय उसे हवा देने की कोशिश कर रही हैं। अमरीका के सदर ने पहले पिछले पीर के दिन जंग बंदी के लिए कहा था। अब कहते हैं रमज़ान से पहले जंग बंदी होगी और वह भी आरिज़ी सिर्फ छः हफ़्ते के लिए। यह तो सिर्फ इसराईल को अवसर देने का एक हर्बा है कि इस दौरान उनको आराम भी मिल जाएगा और वह ताज़ा-दम हो कर फिर ज़ुलम शुरू कर देंगे।

अल्लाह तआला ही है जो उनके हाथों को रोक सकता है। इसलिए बहुत दुआ करें।

इसी तरह जिस चैरिटी तंज़ीम के ज़रीया से उनको ख़ुराक या दवाईयां इत्यादि या किसी तरह की मदद मिल सकती है वह अहमदियों को करनी चाहिए। अपने हलक़ा में उनके हक़ में ज़ुलम के ख़त्म करने के बारे में कोशिश भी करनी चाहिए। मैंने पहले भी कहा था सियासतदानों को ख़ुतूत लिखें और ये लिखते रहें, हमें थकना नहीं चाहिए। सियासतदानों को समझाएँ कि जो भी तुम लोग कर रहे हो बड़ा ग़लत कर रहे हो। फ़लस्तीनियों को भी अल्लाह तआला दुआओं और अपनी रुहानी हालतों को बेहतर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

यूकरेन और रूस की जंग में भी जिसमें यूरोप और अमरीका के बराह-ए-रास्त शामिल होने की ख़बरें आ रही हैं इस से भी आलमी जंग के ख़तरात मज़ीद बढ़ रहे हैं। इस के लिए भी जहां दुआ करें कि अल्लाह तआला दुनिया को तबाही से बचाए। वहां एहतियाती तदाबीर के तौर पर जैसा कि पहले भी मैंने कहा था और पहले हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह भी एक नुस्ख़ा ऐटमी असरात से बचने का दे चुके हैं जमात में काफ़ी प्रचलित है। होमोयोंपैथिक का जो हमारा विभाग है वह बता भी देगा। इस का भी कम से कम एक कोर्स तीन तीन ख़ुराकों का दुबारा कर लेना इसी तरह अहमदियों को दो तीन महीने का राशन भी घरों में रखना चाहिए और खासतौर पर जहां बराह-ए-रास्त जंग का ख़तरा है।

जंग न भी हो तब भी इस का फ़ायदा ही है। पुराना राशन भी जो लोगों ने जमा किया था मुख़्तलिफ़ आफ़ात आती रहीं इस में वह इस्तिमाल होता रहा और उन्होंने यही कहा कि हमें फ़ायदा हुआ।

यमन के अहमदियों के लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला उनकी रिहाई के जल्द सामान पैदा फ़रमाए और वह जो यमनी फ़ौजों को या जो एक ग्रुप है इस को यह शक है कि जमात अहमदिया देश के ख़िलाफ़ साज़िशें करने वाली है उनके शकूक दूर हों और उनकी रिहाई जल्दी हो।

अल्लाह तआला दुनिया को यह भी अक़ल दे कि वह तरक़्क़ी के नाम पर दुनिया की ग़लाज़तों में पड़ने की बजाय अल्लाह तआला की पहचान करें। मुस्लमान मुल्कों को भी अल्लाह तआला इन्साफ़ पर क़ायम कर के एक होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमें भी तौफ़ीक़ दे कि हम अल्लाह तआला के पैग़ाम को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने वाले हों।

एक अफ़सोसनाक सूचना भी है श्रीमान ताहिर इक़बाल चीमा साहिब इब्ने ख़िज़र हयात चीमा साहिब सदर जमात अहमदिया चक 84 फ़तह ज़िला बहावलपुर को पिछले दिनों शहीद कर दिया गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

ताहिर इक़बाल चीमा साहिब की शहादत का वाक़िया यूं है कि दो अज्ञात लोगों ने 4 मार्च को फायरिंग करके शहीद कर दिया। ब-वक़्त शहादत मरहूम की उम्र साठ साल थी। मज़ीद तफ़सीलात इस तरह हैं कि ताहिर इक़बाल चीमा साहिब सदर जमात चक84 फ़तह ज़िला बहावलपुर नमाज़-ए-फ़ज्र की अदायगी के बाद हसब-ए-मामूल सैर के लिए रवाना हुए। दो अज्ञात मोटरसाईकल सवारों ने पीछा कर के फायरिंग कर दी। आपके सिर में दो गोलियां लगीं जिसके नतीजा में आप अवसर पर ही शहीद हो गए। वक़ूआ के बाद हमला-आवर अवसर से फ़रार हो गए। पुलिस ने नामालूम अफ़राद के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दर्ज कर लिया है लेकिन वहां उस के बारे में तहक़ीक़ तो होती कुछ नहीं। बहरहाल मुक़द्दमा दर्ज हुआ है। शहीद मरहूम की किसी के साथ कोई दुश्मनी या ज़ाती रंजिश नहीं थी। अपने गांव और इर्द-गिर्द के दिहात में भी यह नेक-नामी के हामिल और बड़े शरीफ़ुल नफ़स मशहूर थे। सिवाए मज़हबी अंसर के उनकी शहादत की और कोई वजह नज़र नहीं आती।

शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पड़दादा श्रीमान महीन ख़ान साहब के भाई हज़रत हुक्म दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया से हुआ जिन्हों ने 1905 ई. में चक 46 शुमाली सरगोधा से कादियान जा कर बैअत की थी और कादियान में ही क़ियाम पज़ीर हो गए। इस के बाद उन्होंने अपने भाईयों और ख़ानदान के दीगर अफ़राद को बैअत कर के अहमदियत में शमूलियत इख़तेयार करने की तहरीक की जिसकी वजह से शहीद मरहूम के पड़दादा महीन ख़ान साहब ने सब भाईयों समेत बज़रीया ख़त बैअत कर के अहमदियत में शमूलियत इख़तेयार की। बाद में यह ख़ानदान चक 84 बहावलपुर मुंतक़िल हो गया। शहीद मरहूम 64 ई. में चक 84 बहावलपुर में पैदा हुए। वहीं मैट्रिक तक तालीम हासिल की। ज़मेंदारे के पेशे से मुंसलिक हो गए। ख़ुदा के फ़ज़ल से वसियत के निज़ाम में शामिल थे। शहादत के समय बहैसियत सदर जमात ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। इस से पहले बहैसियत सैक्रेटरी माल और ज़ईम अंसारुल्लाह भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ उनको मिलती रही। चंदाजात की अदायगी में बाक़ायदा, नमाज़ क़ुरआन के इलावा नमाज़-ए-तहज्जुद की अदायगी का बहुत ख़्याल रखते। सफ़र के दौरान भी नमाज़ की अदायगी का विशेष इंतेज़ाम करते। ख़िलाफ़त से इशक़ था। मेरे ख़ुतबात बाक़ायदगी से सुनते और जायज़ा लेते कि क्या घर के सब अफ़राद ने ख़ुतबा सुन लिया है। शहादत के समय समस्त लाज़िमी चंदाजात और हिस्सा जायदाद का हिसाब मुकम्मल था। जमाती मेहमानान का विशेष ख़्याल रखते और कोशिश करते कि उनकी मेहमान-नवाज़ी अपने घर में की जाए। जमाती तौर पर न हो बल्कि ज़ाती तौर पर हो। वहां के क़ब्रिस्तान का भी मरहूम ने इंतेज़ाम किया। पाकिस्तान में क़ब्रों का भी और क़ब्रिस्तान का भी बड़ा मसला रहता है। आए दिन कोई न कोई शरीर इन्सान या ग्रुप हमारी क़ब्रों के कतबे तोड़ जाते हैं। उन्होंने अपने क़ब्रिस्तान का भी इंतेज़ाम किया। क़ब्रों का जायज़ा भी लेते रहते थे। उनको maintain भी रखते थे। यह भी आजकल वहां काफ़ी काम है। गांव के अक्सर लोग अपनी अमानतें उनके पास रखवाते थे जिनमें ग़ैरअज़ जमात भी शामिल थे। अगर एतबार था तो केवल अहमदी पर कि यही हमारी अमानतों को सही तरह रख सकता है और साथ दुश्मनी भी। इन लोगों का यह भी अजीब तरीक़ है। लेकिन बहरहाल जो अमानतें रखवाते थे वह शरीफ़ुल नफ़्स लोग ही हैं लेकिन दूसरों को फिर भी समझ नहीं आती।

उनकी पत्नी किशवर नाहीद साहिबा कहती हैं कि मेरे पति मरहूम का रवैय्या मेरे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 04 April 2024 Issue No. 14

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

साथ निहायत मुशफ़िक़ाना रहा। घर में नमाज़ की अदायगी और ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुतबात के सुनने का जायज़ा लेते। मेरे अज़ीज़ों से हमेशा अपनाईयत का और दोस्ताना संबंध का सुलूक रखते।

शहीद मरहूम की बेटी मदीहा ताहिर कहती हैं कि जमाती ख़िदमत में पेश-पेश रहते। इताअत का वस्फ़ नुमायां था। ख़िलाफ़त से बेहद एहतेराम और अक़ीदत का संबंध था। निडर और बहादुर अहमदी थे। बच्चों से हमेशा दोस्ताना संबंध रखा।

अमीर साहिब ज़िला बहावलपुर, मुरब्बी ज़िला बहावलपुर और अन्य ओहदेदारान ने भी शहीद मरहूम की बड़ी तारीफ़ की है। बड़ी हरदिलअज़ीज़ शख़्सियत के मालिक थे। ख़िदमत-ए-ख़लक़ के जज़बे से सरशार थे। मेहमान-नवाज़ी नुमायां वस्फ़ था। मर्कज़ी नुमाइंदगान और वाक़फ़ीन-ए-ज़िंदगी से अपनाईयत का संबंध रखते थे।

शहीद मरहूम ने पीछे रहने वालों में पत्नी मुहतरमा के इलावा दो बेटे और एक बेटी यादगार छोड़े हैं। उनके एक बेटे लुक़्मान अहमद अपनी फ़ैमिली के साथ जर्मनी में हैं। बेटी मदीहा ताहिर यहां यू.के में रहती हैं। एक बेटे सलमान ताहिर उनके साथ ही वहां ज़मींदारा करते थे। अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और सब पीछे रहने वालों में को सब्र-ए-जमील अता फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। नमाज़ के बाद इन शा अल्लाह उनकी नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 फ़रवरी 2024 ई का शेष भाग ..

फिर The Light जो ग़ैर मुबाईन का अनुवादक अख़बार है उसने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात पर लिखा। उस का शीर्षक यह था A great Nation Builder उन्होंने 16 नवंबर 1965 ई. के शुमारे में लिखा है कि "इमाम जमात अहमदिया मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद की वफ़ात इंतेहाई तौर पर प्रभावी वाक़ियात एक ऐसी ज़िंदगी के इखतेताम पर आधारित हुई है जो दूर रस नतायज के हामिल, बेशुमार अज़ीमु-श्शान कारनामों और मुहिम्मात से भरे थे। आप उलूम-ओ-फ़नून पर हावी एक नाबिग़ा रोज़गार वजूद और बेपनाह क़ुव्वत-ए-अमल से माला-माल शख़्सियत थे। पिछले आधी सदी के दौरान दीनी इल्म-ओ-फ़ज़ल से लेकर तब्लीग़-ओ-इशाअत इस्लाम के निज़ाम तक और मज़ीद बरआँ सयासी क़ियादत तक फ़िक्र-ओ-अमल का बमुश्किल ही कोई ऐसा विभाग होगा जिस पर मरहूम ने अपने अलग और प्रभावी असर करने वाले वालों का गहिरा नक़्श न छोड़ा हो। दुनिया-भर में फैला हुआ इस्लामी मिशनों का एक जाल अतराफ़-ओ--जवानिब में तामीर होने वाली मसाजिद और अरसा-ए-दराज़ से क़ायम शूदा ईसाई मिशनों को जड़ से उखाड़ फेंकने वाली तब्लीग़ इस्लाम का अफ़्रीक़ा में वसीअ-ओ-अमीक़ नफ़ुज़, यह वह कारहाए नुमायां हैं जो मरहूम की तख़लीक़ी मंसूबा बंदी, तंज़ीमी सलाहियत और अनथक जिद्द-ओ-जहद के हक़ में एक मुस्तक़िल और पायदार यादगार की हैसियत रखते हैं। हालिया ज़माना में बमुश्किल ही इन्सानों का कोई और ऐसा लीडर हुआ होगा जो अपने मुतबईन की इतनी पुरजोश मुहब्बत और जाँनिसारी का मुस्तहिक़ साबित हुआ हो। फिर आपके मुतबईन की तरफ़ से पुरजोश मुहब्बत और जाँनिसारी का इज़हार सिर्फ़ आपकी हयात तक ही महदूद नहीं था बल्कि उसके बाद भी इस का इज़हार उसी शिद्दत से हुआ जबकि देश के समस्त हिस्सों से साठ हज़ार लोग अपने जुदा होने वाले इमाम को आख़िरी नज़राना अक़ीदत पेश करने के लिए दीवाना-वार दौड़े चले आए। जमात अहमदिया की तारीख़ में मिर्ज़ा साहिब का नाम एक ऐसे अज़ीम बड़े क़ौम के तौर पर ज़िंदा रहेगा जिसने शदीद मुश्किलात के समय में एक मुत्तहिद-ओ-मरबूत जमात क़ायम कर दिखाया और उसे एक ऐसी क़ुव्वत बना डाला कि जिसे नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता।"

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 23 पृष्ठ 182)

बावजूद इख़तेलाफ़ के ग़ैर मुबाईन का अख़बार भी इस तर्ज़ का इज़हार किए बग़ैर नहीं रह सका कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो एक अज़ीम लीडर थे। बहरहाल यह भी उन लोगों का खुले दिल का इज़हार है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में इस तरह के बेशुमार ग़ैरों के तबसरे हैं। इस के इलावा आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर जमात को, उमूमी तौर पर मुस्लमानों को भी नसाएह फ़रमाए हैं, राहनुमाई फ़रमाई है। वे कई मज़मून हैं। कई किताबें हैं। कई मोटी जिल्दों पर ये मुश्तमिल हैं। कुछ प्रकाशित हो गई हैं कुछ प्रकाशित होने वाली हैं। तक़रीरों की जिल्दें ही पैंतीस छत्तीस हो गई हैं। ख़ुतबात छब्बीस सत्ताईस या अट्ठाईस हो गए हैं। तो बहरहाल आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बहुत नसाएह फ़रमाए हैं। सबसे बढ़कर यह कि किसी स्कूल, किसी मुदर्रिसा, किसी कॉलेज, यूनीवर्सिटी में न पढ़ने के बावजूद जो इल्म-ए-क़ुरआन अल्लाह तआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अता फ़रमाया था उसकी मिसाल नहीं मिलती। इस बारे में भी ग़ैरों ने बेशुमार तबसरे किए हुए हैं जो पिछले सालों में मैं वर्णन कर चुका हूँ और अब जो पुराने रिकार्ड में से ग़ैर प्रकाशन नोटिस या ख़ुतबात और तक़रीरों में से जो तफ़सीरें क़ुरआन-ए-करीम की मिल रही हैं वह अभी छपी नहीं हुईं। तफ़सीर-ए-कबीर में वे नहीं आएं। जो तफ़सीर-ए-कबीर के दस Volume हैं उनसे तक़रीबन दोगुने से ज़्यादा हैं। उनकी भी इन शा अल्लाह तआला जलद इशाअत हो जाएगी। ये सब अल्लाह तआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अता फ़रमाया। इस भविष्यवाणी को पूरा फ़रमाया और ये जो भविष्यवाणी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की है यह हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम की सदाक़त की अज़ीम भविष्यवाणियों में से एक है और हमारे ईमान को बढ़ाने का ज़रीया है।

बहुत सी कुतुब की इशाअत अंग्रेज़ी भाषा में भी हो चुकी है। जिनको उर्दू नहीं आती उन्हें इस इलमी ख़ज़ाना से लाभ प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। पहले भी मैं कहता रहता हूँ।

अल्लाह तआला हम सबको इस इलमी खज़ाने से फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आजकल पाकिस्तान में पुनः जमात के ख़िलाफ़ मुख़ालेफ़त की एक लहर शुरू हुई हुई है।

सियास्तदान और मौलवी जो इंतेख़ाबात में हारे हैं या अपनी मर्ज़ी के नतायज उन्हें हासिल नहीं हो सके उनकी एक बड़ी संख्या फ़साद फैलाने के लिए फिर अहमदियों पर हमले कर रही है। उनका हमेशा से यही तरीक़ रहा है कि जब ख़ुद नाकाम हो जाएं तो सस्ती पतित हासिल करने के लिए फिर अहमदियों के ख़िलाफ़ महाज़ खड़ा कर दो। यही ये लोग आजकल कोशिश कर रहे हैं। अपने ख़ुद गरज़ाना उद्देश्य के लिए ये जो भी कर सकते हैं करते हैं और कर रहे हैं और करेंगे। इस लिए अहमदियों को जहां होशयार होना चाहिए वहां दुआओं और सदक़ात पर भी बहुत ज़्यादा ज़ोर देना चाहिए। अल्लाह तआला अहमदियों को महफ़ूज़ रखे।

यमन के अहमदियों के लिए भी बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला उनके लिए भी आसानियां पैदा फ़रमाए। उनके बहुत सारे असीरी में ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं उनकी जल्द असीरी से रिहाई फ़रमाए।

फ़लस्तीनियों के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उन पर भी रहम फ़रमाए और बड़ी ताक़तों के ज़ुल्मों से उनको निजात दिलाए

घाना में जलसा हो रहा है। कल से शुरू है। कल हफ़्ता को उनका आख़िरी दिन है। उनके प्रत्येक तरह कामयाब होने के लिए दुआ करें

उनका जमात के क़ियाम पर सौ साला जलसा है। कल इन शा अल्लाह यहां से जलसे पर मेरी तक़रीर भी होगी। लाईव वहां जाएगी। अल्लाह तआला प्रत्येक लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए।

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad